TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4501**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥श्री गणेशाय नमः॥ नमत सुरासुर मुकुट मनि प्रति बिंबित अलि माल॥ कियें रत्न
सबनील मनि सो गनेस्वर छपाल॥१॥ अथ देशादि बर्ननं॥ दोहा॥ उदित धुरंधर पुरुष
नु मक्र पति श्री जगतेश॥ जिनकी छाया छत्र बस कीनो ग्रंथ असेस॥२॥ कवित॥ स
कल मही मंडल के राजे सिरताज राजपर जयगारी हारी मारि दुमद दंद को॥ देव जगतेस धीर
गुरुता गंभीर धेरे सजन बिपक्ष [illegible] फौज फंद को॥ अतुल [illegible] अनूप को निवा
ताप [illegible] प्रताप मिले जगचंद को॥ मेघ से समुंद से पारथ पुरंदर से रतिपति मैं दर स
मानसर चंद को॥३॥ दोहा॥ जदपि नारि मैं दरस कधर दिपत न नमन हीन॥ सो न अलंक
त बिन लसैं कबिता सरस प्रबीन॥४॥ कीने रसमय सरस कछु बिसर सबदाय बिबेक॥ छा
सालंक गिरवान की भाषा ग्रंथ अनेक॥५॥ नदपि अलंकृत ग्रंथ को काहू कबि नहि कीन॥
भाषा नृपन के जउ कउ पुकल छन हीन॥६॥ याते लाह [illegible] के देप कुवलिया नंद॥ अरु
[illegible] कर सक बिमल आनंद कंद॥७॥ [illegible] पहिले धुर उदाहरन सरसाय॥ कछन ए
कै धरे [illegible] लछन बाय॥८॥ अरु कुवलियानंद को [illegible] लपतिराइ॥ देसी भाषा के पे धरे
[illegible] कवित बनाइ॥९॥ मेदपाट श्रीमाल कुल बिध महाजन काय॥ बासी अमदाबाद के बंसी द
लपतिराय॥१०॥ करौं कबित सों बीनती कबिता जदपि अनूप॥ [illegible] धस्यो बामन सु
रूप॥११॥ [illegible] धवल दीम है मे जिनंद कौ॥ [illegible] कबित [illegible] गु
नलेऊ॥१२॥ कछु सिंगार कछु हास्य रस कछु बीर कछु नीत॥ कछु शांति कछु ना कउ कछु अद्भु
तकउ नीत॥१३॥ [illegible] बिदेस सकल [illegible] सोपाय [illegible] गु॥ य 1
॥१४॥ अलंकार रत्नाकर है यो नाम यह हेत॥ [illegible] लंकार संकेत॥१५॥ अथम

पीव कांदू मैरै अलीकार सत जान ॥ रस प्रमाण तौ जैथरै चौथै संकर मान ॥२८॥ जैसै नग की जोति
मिलऊं दैन तै अधिकाय ॥ त्यौं अलंकार कहि कवित की सोभा बिदई बढाय ॥२९॥ जैसे री ऊ जवाह
री लेत जवाहर येष ॥ त्यौं कविकोमन रीझि है अति अद्भुत अमदेष ॥३०॥ परब लोजनसु कोव कि
यन हि विचार उपकार ॥ अपने चित्त विनोद कों कीनो यह प्रकार ॥३१॥ सत तै रसै अवान वैमा घपस
पित मार ॥ इतन संवत पांचै न योयहै ग्रंथ अवतार ॥३२॥ इति श्रीमद खिल विद वृंद पारावार विंद मक
रंद मिलिंद दलपतिराय विरचिते वंशीधर पीविका निरूपणं नाम प्रथम स्तरंगः ॥१॥ दोहा ॥ जिन प्र
भु के सुमरन किये कटत पाप की रासि ॥ तिनके पद चित धर कहौं अलंकार परकास ॥१॥ उपमेय
रु उपमान को सो है भरम समान ॥ उपमा वाचक पद मिलै उपमा सोय प्रमान ॥ जैहि कुटल कमान सीस
रसै पैन नैन ॥ विथत व्रज बालनि तिन दिवं धरी दिन रैन ॥२॥ वार्ता ॥ उदाहरन मै जैहि औरनै नु उपमेय क
वान अरु शर ये उपमान कुटला कमान तीछण तासी ये धर्म सी सिवाचक [illegible] है यसे उपमा क
हिये या ई कों संलोपमा कहत है ॥ यथा वाक वित ॥ आठें कल्पा धर सौ लसत विशाल लाल भै यल
सो लाल लामेटी के छवि तारी को ॥ चापसी कुटिल तैहि मैन पैन साय कसे कजती उत्तम मामाम है मन
प्यारी को ॥ विंब से अरुन वर्न मी स्द हर छंद सो है पेपपेम पास पल्यो चित्त व्रजनारी को ॥ चंद सो प्रकास मु
री कंज सो सवास थार सिंवडु पत्र सहारी आनन विहारी को ॥३॥ वाचक धर्म अरु बरन तौ असचो पै उप
मान ॥ इक विन है विन तीन विन लुप्ता सोय प्रमान ॥४॥ गज गामन मुष चंद सम कंज नयन इक नार ॥
छवि सों रति जित लपो हर लइ कंत निहार ॥५॥ वाकौ मिलनु इक वकोर तस कमलाने अपार ॥ तो
काक ताली मय यह विनही नैक विचार ॥६॥ लुप्तोपमा के आठ भेद १ वाचक लुप्ता २ धर्म लुप्ता ३ उप
मान लुप्ता ४ वाचक धर्म लुप्ता ५ वाचकोपमेय लुप्ता ६ धर्मोपमान लुप्ता ॥६॥ ।वा॰क॰

वाचकोपमान लुप्ता ८

धर्मोपमान वाच लुप्ता ८ ॥ दूसरे तीसरे दोहा नमै उदाहरन ॥ गज गामन यह वाचक लुप्ता नायका उपमे
य गज उपमान ॥ गति धर्म पृतालीने है ताते वाचक लुप्ता ॥१॥ मुष चंद सम यह धर्म लुप्ता ॥ मुष उपमे
य चंद उपमान सम वाचक ॥ प्रतीन लीने उ घोक प्रकाद वर्तुलादिक तै धर्म मांह तै केऊ धर्म न लीनो
ताते धर्म लुप्ता ॥२॥ कंजनयन यह वाचक धर्म लुप्ता ॥ मृदु उदारता धर्म ओ सै इत्यादिक वाचक को ले
प है ॥३॥ छवि सों रति जित वृत इहां वाचकोपमेय लुप्ता जो पै इहां छवि पदमार के अपने आनन को छ
वि सो रति सों जित वत ऐसो अर्थ होत है सो इहां आनन उपमेय कहु जैसे वाचक इन दुहून को
लोप है याते वाचकोपमेय लुप्ता ॥४॥ काकताली मय इहां धर्मोपमान लुप्तोपमा है सो लिषियतु है ॥
यहां काकताल शब्द क्रियावाची है जो पै काक को आगमन अरु तालफल को गिरनो इन को जुदो २ मूल
अर्थ पाछे काक के आयबे सरीषो अरु तालफल के गिरबै सरीषो ऐसे समास वाचक के लोप सों होय
कै ते लोक काकताल शब्द है सो याते इहां नायक कौं जानो और [illegible] आवनो इह उपमेय सो
तो अरु दोहा मैं लीनो है अरु काक को तो आवनो अरु ताल फल को गिरनो यह उपमान या को सो लोप
है अरु सरीषो इत्यादि वाचक को तो समास मध्य है लोप कीनो है अरु [illegible] पदमें विनही नैक विचार ॥
ऐसो साधारन धर्म लीनो है सो लीजीये तो वाचकोपमान लुप्ता अरु जो लीजिये तो धर्मोपमान वाचक लु
प्ता ॥५॥ अनेक काकताल शब्द सों आगे उपमा [illegible] काक तालीय [illegible] इतने काकताल
सरीषो ताकौं काकतालीय कहिये जैसे गिरबै तन फल [illegible] तैसे [illegible] नायका
मैं सुगति इतनो अर्थ निकसो याते इहां नायक मैं नायका को संजोग की बी सो उपमेय इतन पल [illegible] अपार
या पद करके लीनो है अरु काक अरु ताल फल सो उपमान ताको तौ लोप है अरु वाचक तो छ समास
मध्य लोप है अरु धर्म छे लेप पदमें विनही नैक विचार ऐसे धर्यो है सो लिजीयै तो उपमान लुप्तां न लीनी
तै तो धर्मोपमान लुप्ता यह ठौर बहु न तौ इत्यादि करके विचार लीजीये ॥ यद्यपि प्रस्तार सौं लुप्तोपमा मै

चतुर्दशभेदहोतहै परंतु तामे आवलुप्तोपमाकेभेदहै अरु एकरुप्ता का तिशयोक्ति को भेद शेषपंच भेदकहत याके प्रस्तार सूत्र ॥ एककर अंतलघुतले पहिलेशीसमान ॥ अंक वातक्रमलंगन हि अंकप्रसर अभिधान ॥१॥ प्रस्तार अथ एकाद्यादिक अंकक्रिया सूत्र दोहा ॥ क्रमउतक्रमपुरक आदिदे तरऊपरदै अंक ॥ आगलेऊक्रमअंकसौं पुनहरकमहि निसंक ॥२॥ इहविधआये अंकसो वे अंकादिकमान ॥ लुप्तविकलपलेऊविचारकैयहे जानसुजान ॥३॥

१	१	वाचकलुप्ता	लु	प्तोपमा	गजगामनी
२	२	धर्मलुप्ता	लु	प्ता २	मुखचंद्र
३	३	उपमेयलुप्ता		०	०
४	४	उपमानलुप्ता		लुप्ता ३	काकतालीयः
५	१२	वाचकधर्मलुप्ता		लुप्ता ४	कंजनयनी
६	१३	वाचकोपमेयलुप्ता		लुप्ता ५	कविसौंरतिनिजबल
७	१४	वाचकोपमानलुप्ता		लुप्ता ६	काकतालः
८	२३	धर्मउपमेयलुप्ता		०	०
९	२४	धर्मउपमानलुप्ता	७	रूपकाति	काकतालीयः
१०	३४	उपमेयउपमानलुप्ता		लुप्ता ८	०
११	१२३	वाचकधर्मउपमेयलुप्ता		रूपका	तिशयोक्तिः कनकलतापरचंद्र
१२	१२४	वाचकधर्मउपमानलुप्ता		लुप्ता ८	काकतालु मृगनेनी
१३	१३४	वाचकउपमेयउपमानलुप्ता		०	०
१४	१३४	धर्मोपमेयउपमानलुप्ता		०	०

भेदरचनास्वरूपः

१	२	४	८	१६	
१	२	३	४		

भेदरचना

२	४	८	१६
१	२	३	४

१
२ १
३ ३ १
४ ६ ४ १

१	२	३	४	
४	६	४	१	
४	३	२	१	

अथ भेदरचना ॥ एकादिकक्रमअंककेऊपर दुगुने अंक ॥ धरिकैसबन मिलाइकै भेदकहो निहसंक ॥१॥ अथ प्रस्तार ॥ एकादिकरूपं किलप्रथम इकअंकजर्मत्त ॥ इसआर ऊपरअंकदुगु अंकमेमलहिनि ॥२॥ उपमेहीउपमानजबकहितअनुन्वयताहि ॥ तेरेमुखकीजोरकौ तेरोहीमुखआहि ॥३॥ यथा कवित ॥ पंकजसोछिदतनरजलपसने रहै कंटककेसंगअलिकंपानधरीरई ॥ दौबाकरहीन रोगीराहुलेकमल कलकाकालमाकलंकअंकोतपनतैंहरोरी ॥ पतेमुखअमलअरूपसदा विकसतवंसीभरकविकेहेरमा मांककरोई ॥ कतियेसजानहवावुकोउन्यारीप्यारे आनतिहारे समआननिहारोई ॥४॥ उपमालागेप रसपरसोउपमउपमेय ॥ खंजनसैखंजनसेतुवद्दगखंजनसेय ॥५॥ यथा ॥ सुधावैनसी नैनकेवैनसमान ॥ विनयलनर्के विथहिसे विमलदेनसमान ॥६॥ सोप्रतीपउपमेयकोंजबकीजेउपमान ॥ लोचनसेअंबुज वनेमुखसोचंदबखान ॥७॥ यथा सवैया ॥ तुववैनसमेनवदारजहै तिनकौकुलनैजलमांझ बाशौ ॥ तुव आननसोरजनीकरहोसचऊदिशघेरघनाघनछायौ ॥ तुवचालसेबालमराल जुहे तजमाबनकोंबन औरबसायो ॥ अबअंगनकीउनहारनिहारहोंजीवतसोविधिकौनलिखायौ ॥८॥ इतिपंचमीधरम ॥ उपमेकों उपमानतेआदरजबेनहोइ ॥ गरबकरतमुखकोकहाचंदनिकिजोइ ॥९॥ यथा कवित ॥ बारसकमार औलिलारमेंतिनैनासादंत कीदमकतेनकीजेपुलोनेहरी ॥ अधरसधरकैवकठमुराजनाशिलेककौ नकीजैमदमेटनैनहेरी ॥ प्यारीअैसेअंगनयुमानधरैकाहेअैसीओरतुअनेकछविधरतअछेहरीके कौकनेनाथकके मीनकंजकीरऊंदकमर्मकंदुरीकंबुकोककयुकिहरी ॥१०॥ इतिद्वितीयप्रतीपअर्थ धर यो ॥ भेद ॥ अन्यआदरउपमेयतैजबपावेउपमान ॥ तीछननैनकटाछतेमंदकाममेकवान ॥११॥ यथा दोहा ॥
जिय पाहनजियगरबधरतोहिकठनअपार ॥ चितुरजनकेदेखियेतोसमलाषहजार ॥१२॥ उपमेकोउपमा नजबसमतालायकनांहि ॥ अतितिलमदगमेनमेकदेकीनविधिजाहि ॥१३॥ यथा कवित ॥ आनंदकोकं

दमुषतेरोतासमानचंद कैसैबनै विहीयैकलंकनामधारीहै॥आछीपदरंकरतेरे तायहर
कंजतपनकोबंधकैरैहोतअनुसारी है॥तेरीमुषदाइदेहताकेतोनसमहोतकेपरसरस
कहियतुकटवारीहै॥यैनापतिभनुपमतिहितोहैअनूपनारीतेरीउपमाकोजानन विचारी है॥५॥
कवित॥लोचनलेहैकोसुषसफलहमारोकरप्यारीप्रानपतिकोसनेहरसलीनकर॥तेरीपाइपरम
निकाइकोअवधिहूबजोनकीकुमारअवयतीअरबीनकर॥हारपटगुघटकोहाहाहैउघार
द्रगनिजतनपानपैमेपीकेनैनमीनकर॥कंजछबिछीनकरससिहिमलीनकरसोतनकोदीनक
रप्यारेकोअधीनकर॥६॥इतिराधाजूकोसमतागुरस॥अथहीनोपमाजबबरननीयलषप्यार॥इग
कोगैमृगमनकनरीपंचप्रतिप्रकार॥१२॥यथा॥कोमलकमलमुषीतेरेयुगलजानुमेरेषलबीरछ
कीमतहीहरतुहै॥योंरससुनायकसरंगतैयदेसुजकेयवकरजरुकोकामपानिदरतुहै॥कोटि
तितकमैरताजछजराजकीयैबैषबैषगजराजलाजनमरतुहै॥मोचमोचमदसचसकलपकोच
योचमुषमैसुंडनकौकुंडलीकरतुहै॥१३॥हैसूपकबैजांसकोमिलतापुनअभेद॥अधिकानून
समगुजनकेतीनतीनप्रभेद॥१४॥मुषससिवाससितेअधिकउदितजोतिदिनरात॥सागरतेउपजी
नयहकमलाअधिकसुहात॥१५॥नैनकमलयेऐनहैऔरकमलकेहकाम॥गमनकरतनीकी
लगतबनकलतासमप्याम॥१६॥त्रहैराधेअरबसीधरेमनुषीदेह॥उत्तमुषपंकजविमलयसधरतु
[illegible]॥१७॥नामतउपमेयजेमुषादिकाननैउपमानजेचंदादिकातिनकोयुकताकरकरनकरनेहु
ससबातकोकहिये ताकेषोपभेद उपमेयकोउपमानसोंजुदोइउपमानकरकाहनोसोकैसु
भेदसकः फिरस्कएककेतीनस्तेद उपमेयोसोंउपमेयकोअधिकारहै यो अधिकहीनता कैसो
न्यून उपमता होसोसमअधिकतायेदस्वै ताकेकमसोंतीनोभेदहान हैउदाहरन॥याहीकमसोंकोर
उदाहरन॥विकसतकंजनकोसचिवोसरतहूमकरजुबोतछिनछिनहैहीनबनोहै॥लोचनचकोर
ताहूपरषुपक:सदसमिहतपमाजहारहरतहूनोको बिथ २

मान
नकोमकरंदउपजावेअतिधरतपायमलयैमैदुषदनोहै छबिरससाररससावैमानकेतनकोतोयेहु
हीनविधुकहेविधुकीनोहै॥एसोनंदनंदप्यारीतेरोमुषचंदयहचंदतेअधिकअंकपंककैविहीनोहै
॥१८॥इतिबलपतिरायबंसीधरयो॥अपिचमचैवा॥त्यौद्विजश्रेरेरमुनियमालपयोनिधिमेउपजैनहिजोहै
जपुनपरोबसभुजओरसलोचननाहिमिलिंदकोमोहै॥अरसहमेरहेअसलछप्रतछसकलछनतोस
मकोहै॥सदापरहूरसनतोमुषराधेसुधाधरओरधरापरसोहै॥१९॥इतिवंसीधरस्य॥अपिच॥कहाइनरा
तजानआवैसहोकऊवातसनैमनकंचसमलगानतसमायगो॥थोरैथोरै नैसैनायचौरैचितलेतलंकऊ
उलकलबहरेहियरहरायगो॥तमकाजरयांवरेपिधरनेकुदेषोकुंजमेरेगोरेकाहेलषमनललचा
यगो॥ग्रीवाकीलटकमुरलैरेकीमटकचासचीरकीचटकमेअटकमनलायगो॥२०॥पत्नीनकूअधि
कनतमतापकेउदाहरन॥अपिचदोहा॥रहेसदाविकसतविमलधरैवासमृदुमंजपरमोनहिपुन
पंकतेप्यारीकेमुषकंज॥२१॥यहअधिकअभेद॥अपिचसवैया॥द्विजउराननपासरवेजयजंतुकेबंधन
काजधरे॥कंचनकामनकेसरसंचलषेमुनिकेमनध्यानटरे॥लीनरहूनमेयोजननांहिअधीनसदेजि
हपायपरे॥सोइसदाछबिकोसुखसदनअनूपमसरबुष्पदपधरे॥२२॥इतिवंसीधर॥इतिनूनअभेद॥अ
धमअभेदउदाहरन॥अरुनहरोलनजमंडलमुलकपरचंदोअकुचुकवैकिनारदेकिरनकोर॥अ
बनहीयांबननमनजोरधायुरघोरघमड़ानकरकामआयोवरजोर॥मिसकरमेंतुम्योयटकोसहेमयासिव
३ मलअरतकजाय[illegible]रिकिंदरनकोर॥दुदेषअरिबिंदबंदीधांनेतोनगोनोपायकुलिदिबेमलिंदमकरदंचो
र॥२३॥पावसदरोगापेलेपवनमहावनदैकारेकारेमनयकथनपवायुदे॥लयेबगपंतदंतगरजनुघंटाधु
स नधुरुवा[illegible]कंउनजलसीकरनायेहै॥इंद्रकेधनुसमीचित्ररंगदामनसौअंबरजरीकेओढरचमकायेहै॥अ
जबदावनमामामास्यामअंगोस्वसुषमदनकेजराजिमुजाकोआयेहै॥२४॥अंबरयेबरमैकारगजबीचो

[illegible]

जालतारादु ततरलतरंगपकै देवाईहै॥चमूकेजरानिवका चकवाऊवंगपरा॥किरवकिरनैनोर
बाजहंउमाहे॥षेवटमलंकारीयेकतिकसुघानहिमचकुरआसननकोऊकिरननैनाहै॥का
मनरराजमानमीनकीसिकार काजआजसीतदीधितसनेमाचढआयहै॥१७॥किंच॥घेरकैधम
नघनताराग नवनीरजोकजालरोपकेचनायवसारको॥मातेमकरंदपायकुमुदिनिकानन
केकूटेसैमालोरधरिगवअपारको॥बोलतकरालचकओरनतेचकोरचढकुंजरउदयगिरिक
रेमदधारको॥आयोयाहसीतकरराजसबसाजआंसुबांधयमयेरमानपेरकीसिकारको॥१९॥
इतिरूपतिरायस॥ककरै क्रियाउपमानकेवरनीयपरमान॥लोचनकंज बिसालवैदेषतदेखीवा
न माधा॥वार्ता॥जहांउपमानआपुवैक्रियाको साधनकोसमर्थहोयतहांवाहीउपमेयसोंप्रकरूपक
रक्रियासाधैनहांपरणामालंकार॥जैसेकंजमेंदेषवेकीक्रियावीननहीताते वाहनेत्रसोंप्रकरूप
कीनोरनतेदेषवोवनेोययावादोहा॥पतिआतहिआयेसदनकऊरेनसरसाय॥चाहुरनेहक
मानकीमेननकहतजतायं॥२॥सोभनेमजुपकनेकोंवऊसमभैचकोर॥अथिनसरतस नियम
दनअरिकोंकालप्रतीत॥२०॥यथावा॥नवलनिवाबषांनषानाजूतिहारेकरबेरीविकरानेधुनसकन
केनिसानको॥विनहंकोरानीफिरयकीविरुलानीयनकूटीरजधानीकधवानकीनरपमको॥क
अनवर्ग्ग जानीकेहरनमगनमयंकओकपिवजानीमानको॥१८॥दोहा॥कऊविधिवरनैपककोंकऊविधि पुन
मेंवदेख॥तूरनआरखुनतेकरविस्करयुतवचनविशेष॥१९॥यथावा॥कविनकोराजैजोजेओज
अवमर्म कौमरोजबंधुदीनकोदयालोसिंधदानसीलको जिहाज॥कोटिकामसुंदरहे साधिवपुरिंदरहे मंदि
रहैवेरीवलवारधमयनकाज॥जगमधजालमेकलंकऊकआलमको बालमधराकोसवसूरनको ४
अनंतर

सिरताज॥विक्रमअपारससस्कजसकोपारावारनारीनीरघंजनसमथसाहुमहाराज॥
॥१३॥इतिचिंतामणि॥दोहा॥सुमरनत्रमसंदेहयेलक्षननामप्रकास॥सोधत्रावन
५ वाबदनकीदिषैसकमानिवास॥१४॥वदनसुधानिधिजानिकैंउवसंगफिरैचकोर॥वद
नकिधौंयहसीतकरकिधौंकमलजयैनौर॥१५॥यथावाकविन॥अबहीतोदिनदस
वीतेनांसनाहचलैआवहीतेंआईकहकोलोंविसरहें॥आवोषेलेंचौपरविसारेंमति
रांमदुषषेलनकोंआरजांनविरहकोंसरहें॥षेलतमेंकाहुकहयोजुगजिनफदोमारी
मारीजइसारकोनिवाहहोनोदूरहें॥यासिदमेरुरमनमांसैहीमेंबहगयोविसस्योनदु
षदुषदूनौभरपूरहे॥२०॥कविनकेघरेंकरुरमदधारवैतौबांधकेकतारेंझोरनीरघेर
यतुहै॥कविरराजनेरीनोमनीनिकमतापैनिगझनरंजूलहाथफेरयतुहै॥अंबुकैथ अ
वैझलिलागेउफितियकरसोसोंतिनपीवपीवकरटेरियतुहै [illegible] हरषहसुरआउबैत-
चेंदावरेमांचानकेतमासहेरियतुहै॥२१॥किधौंसिकताईकेंपमानेकेसिमानतानेसकंद
रकधारीषटकुटकाहेलाजकी॥कोकसालासकीककामकीसेजकिधौचलनइको ही
मलकेलहकामबीजकी॥मोहनीकोजलकिधौंवहोअमीकुंनतनैमरीहैअंधारीकि
धौमनगजराजकी॥गोरेरगोलकुचतेरेनीलकंचुकीकेपहीमिलहरतरनकेसमाजकी
॥२२॥किधौंउहदेसघनघुमरुनवरषतकिधौंमकरपेंयनदीनदनगो॥किधौंपिकचाउ इवि
कचउरचकैवाकउकेकिधौंमनदादुरमधकेमोरमरगे॥तूतोकहआवतहेंआवतनमेरी
५
5

आलीकामकरीनिकरमहीतैं धौंनिकरगे॥ किधौपंचसरहरफेरकैंजसमकीनेकिधौ
पंचसरजूकेपंचसरसरगे॥२३॥दोहा॥धरमदुहैंआरोपतैंएकअपकुतजांन॥उरपरनांह
उरोजएकनकलताफलमांन॥२४॥वार्त्ता॥एकवस्तुमैंएकधरममिटायवाकेवोरऔर
हीधरमठहरावैसोअपन्हुतः जैसैंउरोजनकोउरोजपनौमिटायफलठहरायो॥अ
थावोकवित्तः॥वदरानहोइदलआयेमैंनभूपतिकेचुदियानहोइघरीवानझरलाईहै॥
दादुरनहोहियनकीवचंऊऔरबोलेंमोरपनहोविरहाकसूरनसुनाईहै॥चुगलानहोइ
सेतध्वजाजगवंतसिंघचपलानहोहिसमसेरचमकाई है॥बालमविदेसयातेंविरह
आनिया नमारेवेकोजेगनेनंहोइकामजामगीजगाईहै॥२५॥अपिचसवैया॥लछनतिछ
नअबुठयौचलरूषनकेजहांदुष्यनसेरे॥देवोमयंकमयंकनहीयहदैवसहमारेक
लंकवसेरे॥हैनलिनीमलनीमुषमुदितकंतकेदोससेनेलाजबसेरे॥त्राहुकोलंगविलो
जि कलैगंभीतिनके रविहंदहसेरे॥२६॥दोहा॥वस्तुदुरावैएकसोंहेतअपकुतसो
य॥तीछनचंदनरैनरविवडवानलहैसोय॥२७॥यथावादंडकः॥नोहीत्रीनदीधितिके
करननतापतनरैनत्रैकेहातेरविउदयोजगगर॥यहऔनिकरवकोहृदयसतापीपा
नायकोक्त पीदेषतहीजाकेहोतहियराधागर॥निरषरीनेऊयहविरहनबालामुषचंदगर
वेकेकाजलालवलगगर३॥अमोद्विजराजजाकेपापकेसमोजनयोकोहीतमेराजआ
जआवततगग२॥२८॥छतिदलपतिः॥पर्यस्तमेगुनऔरकोऔरविषेआरोप॥हो

यस्कधाधरनांहयहवदनसुधाधरओय॥२९॥वार्त्ता॥एकवस्तुमैंएकधर्मकोनिषे
धताधर्मकोऔरहीठोरठहरायेसोपर्यस्तापह्नुत॥जैसेचंडमंडलमांहिसोचंदपनोनि
षेधमुषपेआरोप्यो॥यथावा॥तुमकरतारजगरछाकेकरनहारपूजवनहारमनोरथचित
वाहेके॥यहेजियजानसेनापतिहेंसरनआयोकृजीयेदयालमोहंतापदोषदाहके॥जो ऊ
कोऊकहेंमेरेकरमनऐसेहमगाहकहेंसुकवितनुगनरसलगाहके॥अपनेकरमकर
होंहीलुगतोंगोतोपैहोंहीकरतारकरतारतुमकाहके॥३०॥पर्यस्तापह्नुतितमैं समर्थ
समर्थनहेसमतीरहुपर्यस्तापह्नुतकाहिंमे॥यथासवैया॥कोऊहरासरकोऊकहेंवि
षजोरकहैमतिमूढयाजन॥मेरेतोजानरमाविषहेलईहेंसुआतिदोरतजाकीसदाम
न॥ताकोप्रमानप्रसिद्धप्रकासकहेंसुकविकोविदवेदपुरानन॥बाबकेजागनत्रांखुवि
बेदरिसोवतहेपरमेजरमातन॥३१॥दोहा॥भ्रांतापह्नुतवचनतेंभ्रमजबपरकोजाय॥
तापकरतहेजुरनहीं॥नांसषिमदनसंताय॥३२॥यथावाकवित॥चंदजिनजानलालसो
हहतविलकयहगंग जिनजानसीसमोतीमांगभरीहे॥रसिकनजानयहवाअंबरहेंसंगके
सरिबसनम्रगमदबूंटीकरीहै॥भ्रमलुरायेजिननलेअंगचंदनतेंव्यालहीनजानमाल
लमोतनकीधरीहे॥परेमारहरजकेधोषेमतमारमोहकाहेसतरातचकमोनिनांहपरी
है॥३३॥पहिलेउदाहरनमैंभ्रमनिर्नेयहेंआरूहपरमेकल्पितहे॥ छेकापह्नुतकहकर — अरथदो
परसोंबातदुराय॥करतअधरछतपीवसषिनांहिशीतरितुवाय॥३४॥यथावाकवित॥तोतन
कैआवतनिकुंजमधिमंदरपरसततवेगनादेपुलकसरीरहे॥अंगरकोपेजऊजननन्हेपेनऊ

लेतऐचश्रंचरकोंश्रालीश्रतिधीरहै॥मोसोजोछिपावतसोपावनहोंकोतगकोंकरे
ऊटलाईकाहजामोवलवीरहै।तेरीसोंनवलवीरयमुनाकेतीरजबजालनीरकाजत
वलागतसमीरहै॥७५॥इतिदलपतिः॥दोहा॥रहौलकौंवोंरूस्कचल श्राधिकरातप +
कैतवापन्हे धार॥हरततापसववोंसकोउरलगय्मारवयार॥९॥कितवापुकुतश्रारकैमिसकरवर
ननश्रान॥तीछनतीयकटाछमिसिवरषतमनमथवान॥७७॥यथावाकं॥नमुत्र
हैश्रथलोतजतेश्रहैजगनूअगश्रोलिकरै॥मोंनमरालगह्योततकालश्रलूकर —
मंचश्रनंदधरे॥कोकहियेश्रतिसोकबढोतमलोककेलोयनश्रानश्ररे॥यहुव
तैरिसकेविसकोंनलनीमिसत्रंगकैशीतिहरे॥७८॥[illegible]॥इतिदलपतिरायस्य॥
नर्क ॥दोहा॥उत्प्रेक्षासंख्याकंठा॥वस्तहेतुफलसिद्ध॥पहलीउक्तश्रनुक्तहैपछलीसिद्ध
श्रसिद्ध॥७९॥कोकनकेविरहागकीधूमघटातमभानु।श्रंजनवरषतगगनयहमा
नोंश्रथयेभानु॥८०॥मनुकठिनश्रागनचलीरातेतातेपाय॥मुखसमनहियातेमनों
— चंदहिंछायाछाय॥८१॥मनुऊचधरवेकोंवलिनवांधीकमरकसाय॥उवपदसमता
कोंकमलजलसेवततपकाय॥८२॥वार्त्ता॥उत्प्रेक्षाकेतीनभेद॥वस्तु।१।हेतु।२।फ
लः३।वस्तूत्प्रेक्षाकोस्वरूपउत्प्रेक्षारूलकहतहैताकेदोयभेद।उक्तविषया।१।श्रनु
क्तविषया।२।कोकनकेविरहागकीप्यहतेउक्तविषया।जोपेतमकोंधूमकीउत्प्रेक्षा
उत्प्रेक्षा कीनीतहोंविषयतमउत्प्रेक्षाधूमपदोरुकहैहैयातेउक्तविषया॥नुवनमैतमयात
९

मोमानोगगनश्रंजनवरषतश्रेमोश्रर्थचहस्योतामैतमकोफैलवोयहनांहीक
ह्योकेवलश्रंजनवरषवोयस्तउत्प्रेक्षाकह्योहैयातेश्रनुक्तविषया॥हेतूत्प्रेक्षा
केदोयभेदःसिद्धविषया१।श्रसिद्धविषया२मनुकठिनश्रागनचलीयहसिद्धविषया
जोपैसकलायहीसोंपदरातेहैंतहांजलवोहेतुभानुलीनोसोप्रसद्धनायकाचलतहीहै
यातेसिद्धविषया॥श्रोरमुखसमनहियहश्रसिद्धविषया।जोपैचंद्रमंडलमैस्वभावही
३८ सोंछांयोहैंतहांनायकाकेमुखसमहोइस्हेतहोत्प्रेक्षाकोहेतुमानलीनोहैसोफ—मू
लसोंचंद्रमामैंहैनहींकविनेरीझहरायलीनोहैयातेश्रसिद्धविषया[illegible]
॥फलोत्प्रेक्षामेंऊदोयभेद॥सिद्धविषया।श्रसिद्धविषया॥मनुऊचधरवेकेयहसिद्धवि
षया।जोपैत्रिवलिसोंछीनकटिकोंवांधवोताकोप्रयोजनकुचनकोधरवोमानलीनोसो
हैहीजोपैतियकुचकोंधरतहीहैयातेसिद्धविषया॥उवपदसमश्रसिद्धविषयाजोपैक
मलकेजलसेवनकोफलजन्मांतरमैतियपदसमताभानलीनीसोश्रचेतनकमलको
संभवैनहीयातेश्रसिद्धविषया॥यहीक्रमसोंश्रोरभेदजानलेनक॥रतिविपरीतिमृगने रवि
वे नीकीविराजैवेनीकनकलतोंजोभुजंगीलहरातहै॥स्वेदकनगिरतकपोलतेमुकुतदला
लमानोंतमदेवसुहुश्रमीवहरतहै।कुटिलासमीपराजैलोलचलदलदलकंचनसो —
तनप्यारीसोसोघहरतुहै।निजवरदारदुश्रंसनलगायमानोंदुरश्रारमैनकोफ
लूहफहरतुहै॥८३॥सोहैंतश्रंगफुलेलसुहीलटलेपगतालचलैधुश्राछै॥वीनव
रीकटिपीनउरोजश्रलीश्रंगियांतनियांसरकाछै॥ईंछाचितैमुरमोहनसोइगकोरकी

औरकरैजऊकटाछैं॥घूघटस्वेतसरोवरजीतरमीनपरयोंमानोंमीनकेपाछें॥४६॥इति
उक्तविषयासरूपोत्प्रेक्षा॥कवित॥आजसषीहजराजविनोंरतराजलषेहियरानर
से॥वंसीकहैकविदिषनिमेषलगैनहेंचापतनैंसरसें॥आधिकलालजरैंपुंजनैंविधु
आधुकस्यामघरेदरसें॥मनकमारपहारनमंकुंजअपारअंगारनकोंवरसें॥४७॥य पत्र
दिस थावाकवित॥पूरवदहिलविनताकोंमफवताभैपत्रेंरचनासुचिरवरमृगमदरंगकी॥ तिलक
किधोंनसरवरफुलपुंडरीकमध्यमेचकजलाहेअलिआवलीअनंगकी॥सक
विनउपमाअनेकऐसीकहीकविदनबषानेयकरहेविधअंगकी॥विरहीनिरष
याहिनोंमतनिसासत्यातैहागलदिषातमानोंआरसीअनंगकी॥४८॥इतिअनु
क्तविषयासरूपोत्प्रेक्षा॥सवैया॥पंडवकीरानीगहरावरतेंआनीमिरोमनविलला
नीविलषानीमहाचेतुहे॥घटलैघटायेनघटलठपटतपटदु[illegible]मासनवार२टेरकैकै
लेतुहे॥पांचनअछतिआंचपतिकोंनलागीपांचपतिकोंविपतयदुपतिकीनोहेतुहे
सांझसमैंआल गोपनकोंवार२रावैपत्रकोंस२वेईमानेंजोर२द्रोपदीकोंदेतुहे॥४९॥इतिसिद्धविषया
वेलीनियादिय हेतूत्प्रेक्षा॥किंवस॰॥पीनवहेंअतहीसियरोनवऊंचरमैंसफदेवदुरावे॥देषउ
गकरवैअपने रोजनकीदुतिदीपकआपनेंहीहियतैललचावे॥कीजैकहागहवैवोनहींकरया
घरआवे॥३४ हीतेमानऊसीसधुनावे॥५०॥इतिअसिद्धविषयाहेतूत्प्रेक्षा॥कवित॥आलीरीविहा
रीवकानुकीदुलारीजाहिपेषप्रानप्रीतमकेप्रेमपासमेंपरत॥जोंहनकोफेरवोओ

७

हेरवोविहसमंदटेरवोसषीकोंजवनाहअंककोंभरत॥आजलोंनजानीहोसोपरीपहि
चानीअवजोवननिसानीऐसीअंगरहीधरत॥विधिनाप्रवीनमानोंतनमैनवीनकीमों
चाहेऊचपीनयानैंछीनकटिकोंकरत॥५१॥इतिवंसीधरस॥इतिसिद्धविषयाफलो
त्प्रेक्षा॥कवित॥हावभावमगरलगरगहलेतहटचिवुकअथाहचारुआवरतअरु
हे॥काऊफेरकचनरलेऊघेरस्वेऊटीतरंगनैनमीनकोंमसहे॥प्यारीकेवदनपरवे
षरकौमोतीचलचातुरकहितजिम्हकहवैकोवसहे॥पंथीमनमनेकरवेकों
कसौकासीविधिमानोंरूपसिंधुमेंसिकंदरकोकरहे॥५२॥इतिअसिद्धविषया
फलोत्प्रेक्षा॥मनुजनुसोवाचकयहैउत्प्रेक्षाकेजान॥जैसैसैसोंलोंआदिदेउपमाना
चकमान॥५३॥कोउवाचकनहोयअरउत्प्रेक्षासंभवैतोगम्योत्प्रेक्षाकहियै॥कवि
त॥नृपतिहेप्रेमलालमेरेहेंनिमानतेइचंचलताचउरतुरंगनीरजारीहे॥देषवोअ
नेकभांतितेइअसवाररेयकाजरकीसोईकरीकोरसीसवारीहे॥वरुनीवंहुकनकी
पांतसीलइहैंपियविरहगनीमेटारवैकीपेजधारीहै॥सरदसककविस्वेतस्यामर
गवागेवनेप्यारीतेरेनैननमैंनीकीअसवारीहे॥५४॥दोहा॥अतिशयोक्तरूपकज
हांकेवलहीउपमान॥कनककलतापरचंद्रमाधरेधनुषद्वैवान॥५५॥यथावास
नख द्वेया॥थिरजावजहांयुगजोंरगहेंगिरिमोतीकीमालविसालवमें॥ससिसारदशीन कारदरोंभद
यमीरवहैतिलफूलनेयारसुगंधनमे॥तमअंधकोवंधनहीलोतयोधनुकामकों

8

सोचततादिसमे॥इहनांतचरित्रविचित्रकोरतिहदेवमनोजहकोननमे॥५६॥इतिहद
यानंदसनावरस॥जैसेरूपकअलंकारमैतदूपअरुअभेद फिरइकइकके अधिक
न्यूनसमभेयेछवभेदकहैहेतेयेस्वांसूजानने॥कहेदोउदाहरनसमअभेदरूपकति
केहै यथावा॥राऊनदीनिगस्योरिसकैसकउजीगकियोवहिदेवसमाज॥ताजोनहीरविमं
उलतेतरूनीमुखचंदऊकोसिरताज॥जैसेउत्परूप्रकासकियेबिनुअंबरहीसजदीधि
नसाज॥कोमहचंदमयोउदयोविनुअंकनिसंकलस्योहजराज॥५७॥यहअधिकता
रूपककोउदाहरन॥हैकोमहचंदयावचनकरकेप्रसिद्धचंद्रसोंमारोठहस्यो॥यातेतादूप
अरूराऊनहीनिगस्योइसादिकविशेषणसोंअधिकताकहरीअैसेऔररूपभेदविचा
रलीजो॥दोहा॥होइअपकृतसोमिलीयापकृतसबजांन॥अहिविधमंडलपैलयै
जियपतारजिनआंन॥५८॥रूपकातिशयोक्तजोअप्रकृतसोमिलीहोयसोसापकृ
तरूपकातिशयोक्तिकहियेजैसेपतारकोंअहिकीअप्रकृतकरचंद्रमंडलमेंआरो
पनकीनोइतनेसुखपरअलकन्योइचंद्रमंडलपरयोंपदे॥यथावा॥मुकताप्रवाल
सार मैमधकरसंसोंहेसुहपनयोंहीयसदेषदइदीनोहे॥बेनोइकठोररहेराकापतमंडलमैआ
रधिकोनावहथाविकलनलीनोहे॥ताकोनउदयपहोवकंबुपरदेखिमतकूचेजसधारी
जोउदयगिरिकीनोहे॥मिलकैअयानविनुयमजैप्रमानकरेआननमेंजिकैनेरोरूपन
नवीनोहे॥५९॥इतिदलपतिरायस॥रूपकेतारूमेंअनुकृतअलंकारसर्वस्वकत्तोनेकहौ ८

हैं॥यथाकवित॥तैसीचषवाहिनचलतठतसाहनसोंतैसोविधुवाहनविराजितवि
जेठाहै॥तैसोभ्रुकुटीकोघाटतैसोइदिपैललाटतैसोइबिलोकवेकोंपीकोआनपैठोहै
॥तैसीयैततरुनइनीलकंठआभूउरसिसबवहाइतासोंफिरैअैगोरहै॥नांहीलटलाल
परबूटीगोरेगालपरमानोंरूपमालपरव्यालअैठबैठोहै॥६०॥यहसापकृतवस्तुउत्प्रेक्षा
पंकज कोउदाहरन॥सवैया॥रूचिवृंदनवंदनकंचनरंग रंचनरोचनरूकीवचा॥कहियेकिहका
रनकोइतलायककापरता मिनिनोंरैनची॥अनुमानितहौअंमियालयलालयनोछिनरा
तिकेरोघरची॥तनतेरेदियोगनमोतरुनीतिहकारनमोहियमांहितची॥६१॥यहसाप
कृतहेतउत्प्रेक्षा॥सवैया॥आयेकअनतेमनमोहनसोहतमूरतिमैनमई॥आरमसों
रससोंअनुरागसोंरूपसोंरीझिमोंदीठठइहै॥रावरेजोवनअंजनराजतमोरनैमोमतसेहत
इहै॥जांनतहोंउहनावनीओरसोंबोलनकीमुदछापदई है॥६२॥यहसापकृतिफलो
नेत्रीशपूर त्प्रेक्षा॥अतिशयोक्तलेदकजबेयहविधिवरनतजात॥औरहसबोदेषबोऔरैयाकी
वात॥६३॥यथावादोहा॥औरेआपकनीनकनेगनीधनीसिरताज॥मनीधनीकेनेहकी
वनीछनीपरलाज॥६४॥संबंधातिशयोक्तजहांदेतअयोगहियोग॥यापुरकेमंदिर
कहेंससिसोंऊंचेलोग॥६५॥वार्त्ता॥मंदिरसससिसोंऊंचेहोइनहिसोकहेयहसंबंधाति
शयोक्ति अयोग्यकोयोगकह्यो॥यथावाकवित॥राजेमिघबरसअंबरपरसकरितेजच
क्रवांधेहोतवाहनदिनेसके॥संपनकेसीकरछुटतजबऊरधकोंवसनदरीचनकेली

जंतसकरेसबके॥लंकाहोतसंकाक्रनघननघंटाघोषचलतचलतपनगनभुजगेसके
॥उकतमिलिंदगंडमंडलमेरामकह्ल्लघूमतगयंदफिरेकोसलनेसके॥६६॥अथ सवैया॥
सवैया॥लालकियोपरदेसकोगोनसुनीबेसोंनसबीकपदाहीजोरनथैजललैनगईक
विराजमनोंभवनभमताई॥कमलडागनदीजिहजायसकीतोछेजाइपरैपरछाई॥सोजस
मैंआगरीआनिरूपकीलेगगरीफिरहीतीयेंकाई॥६७॥अतिशयोक्तिहेजीवहैजोगत्रि
जोगबखान॥तोकरुत्रागेकल्पतसकेयोपावैसनमान॥६८॥यथा॥सुमनमेवासजैसेसु
मनमेंआवैकैसेंनाहीहोंकहततनीहींहंकसेचहतुहै॥सारसरीसरजामेंसरसतीसोहै
जैसेवेदकेबचनवांचेसांचेनिबहुहै॥परबाकेइंदुकीकलाजोरहेअंबरमेंपरिवाके
अबपरतछनलहतुहै॥जैसेंअनुमानपरमानपरबाहीसोंसोंवाकामनीकीकटिकवि
मीरनकहतुहै॥६९॥अतिशयोक्तिअक्रमजबै॥कारजकारनसंग॥तोसरलागतसाथ
ही॥धनुषहिअरुअरिअंग॥७०॥यथामुंदरा॥लोयनसरप्रांधतेतेजोंचापकरतेहै
॥मनमोहनकेहूतपयोप्रगटज्ञानमेंहै॥७१॥चपलासुकिजुहेतुकेहोतनामहीका
ज॥कंकनदीनइमूदरीपीयगवनसुनआज॥७२॥यथाबासवैया॥बालमलालचवि
देशचल्यहुयतकैयेंजरीहमकामुकराके॥जेचुरियांकरआवतनांहिरीवेचुरियां
छोरबराके॥आलममालनविसरतबालमबोलतहीपियधारघराके॥कंचुकीमे
उचयोउनस्यैसकगयोवंधतूटतराकतराके॥७३॥असंगतातिशयोक्तिजोपूर्वपर

कमनांहि॥बानलगैअंगलोंअरिपहवैगिरिजांहि॥७४॥यथाकवित॥चंदा
वनचंदहोरीमेलतअनंदनरनूतनअधिकछबिराजेकोटिमारतै॥आईहजे
गोरीजोरीथोरीथोरीवेयनकीप्रेमरंगबोरीमनेंजोरीइकडारतै॥रंगभरदोरीआनन्नी
तमकोंनिजवनयरीकहांकहोंलखोकोतिगनिहारतै॥पिचकारीआननलेंपोह
चननपाईलोलोंजगयेसांवरेगुपालरंगधारतै॥७५॥तुल्ययोगितातीनविधिलक्ष
नलछप्रमान॥होइअवर्णकवर्णकोएकेधरमयमान॥७६॥कोकहुंनलह
तसबीसोखरजतंग॥वेननेनवांकेनयेप्रगटतजोवनअंग॥७७॥वार्ता॥ज
हांअनेकअप्रस्ततनकोकेअनेकप्रस्ततनकोएकधर्महोयतहांतुल्ययोग
ताजैसेप्रस्ततकुचनवर्ननकेप्रसंगपायअप्रस्ततकोकहुंननकोंयोलाकोनपाव
तीमहएकधर्म॥औरप्रस्ततजोबनवर्ननकोअवसरपाय प्रस्ततहीबेननेननको
वांकपनोएकधर्मकह्यो॥यथावाकवित॥जाकोंयहआपनोकेजानतजगत
जियसमतोहेंअनिसजैसेंइंद्रधनुघनमें॥तिनुकाकेअग्रपरपहरतबारिबिंदुआ
युषअथिरऐसेराजहेतनमें॥ऐसेंइंद्रजालरूपमेमोहतहेमूढजनजानततनरूप
जाकोवेमीराममनमें॥जलकोतरंगजेसेबादरकोरंगजैसेंबीजुरीकोरंगजैसेंसंगुर
देजनमें॥७८॥अपनेअंगकेजानकेजोबननृपतिप्रवीन॥स्तनमननेननितवकोंवमो

इजापादीन॥ ॥शत्रु मित्रपेहुतिसम होयसुत्र्प्रोरश्रकार॥गुननिधिनीके देतनृति
५० यकोंत्र्प्ररिकोंहार॥ ॥यथा॥कोककाटोत्र्प्रोधकर केरयीचोधरनेह॥ वेधतहै
त्र्प्रवंबूरकोनऊदुजनकीदेह॥ ॥ ॥दानवारवारिधिविपुलपरबाहमधु
दीनेदीनदारदकेदुमसेवहायके॥देतरदेहैवांटत्र्प्ररथिनुमेरुगिरियातेकोककी
कीरहेमोदमन छायके॥ ॥मुषचंद देषेवदनत्र्प्रनंदत्र्प्रतिलोचनचकोरनकेउ
छाहीनपायके॥रावसभौप्रतापसिंघप्रबलप्रतापतेरे मित्रत्र्प्ररुशत्रुरहेदेह फल क
पायके॥ ॥जगप्रसिद्धकीपांतिमैगिनेजुप्रस्तुतजान॥लोकपालसुरयतिबुधय
मकुबेरनृपमान॥ ॥वार्ता॥इहांइंद्रादिकप्रसिद्धनकीपांतिमेप्रस्तुतराजाकोंगन्यो
वातुल्ययोगताकेभेदकोंकेई सिद्धत्र्प्रलंकारकहतुहै॥त्र्प्रोरकेतेदीपककोंएकहि
गहेयाहद्दीपककोलछनकहियतुहै॥दोहा॥दीपकवर्ण्यत्र्प्रवर्ण्यकोएकेधरम
समान॥गिरिथिरगदगुनवंतकोंहोतत्र्प्रचतामान॥ ॥प्रस्तुतगुनवंतत्र्प्ररुत्र्प्रप्रस्तु
तपहारथिरगढइनकोउचतारूपएकधर्मकह्योजैसेघरकेलीमैकीनोदीपासोत्र्प्रांग
नहूमेउजियारोकरैतैसेप्रस्तुतनकोलिखेधस्योकोऊधर्मत्र्प्रप्रस्तुतनहूकौंसंनवै
यातेदीपककहियेयुदाधिकत्र्प्रप्रस्तुतगिरिथिहादिकपहिलेकानेहैत्र्प्ररुप्रस्तुतगुन
वंतपाछेलीनोहैतऊप्रस्तुतकोप्रस्तुतपनोजायनहीजोपेजवाईकेकाजमातकी
नोतामांजनैपहिलैकरतुन्त्रातिष्यकोदीनोयातेजवाइकौगुरुतामिटीनांही॥यथा॥ ५५

६६ ६७
वरश्वरषा२माकंद३घन४वनिता५वचन६वाह७प्रविनुमोरनमोसिये ताकेचतुरउया
हा॥ ॥ ॥सोंत्र्प्रमसोंमसनकोएकधर्मनिरवहरा॥त्र्प्रपिच॥क॰॥जाकेउदेहोतजगदपड
दिसानमैनेसुरजातनमचेरगिनत्र्प्रापने॥वाढतत्र्प्रनंदत्र्प्रतिहियेलोकेकोकेनकेदु
— वनत्र्प्रलकदवेदीरघसतापते॥जोरस्त्र्प्रंजुलहीविनयवदामवाऊवदत्तविलोकयैवबु
देदुमदापनै॥होतहैहदूरनूरमित्रनकेदूरहीतेदूरत्र्प्रकप्पुरहीराजनप्रतापनै॥ऽ
नवसीधरम॥दीपकत्र्प्रावृतनीनविधित्र्प्रावृतपदकोहोइ पुनहेत्र्प्रावृतत्र्प्ररथकीदुजे
कहियेसोइ॥ ॥पदत्र्प्ररुत्र्प्ररथहूनकीत्र्प्रावृततीजीलेष॥घनवरसेहेरीपुबीवि
ज्ञावरषेहैदेव॥ ॥फूलेबछकदंवकेकेतकिविकसत्र्प्रादि॥मत्तनएहमोरक्रम —
राजम चानुकमतेसरात॥ ॥जैसेदीयातोंनमहिजोपेतत्र्प्रनेकवस्तकोंप्रकाशकरेतैसे
एकदीपकवस्तकेप्रकाशकर वैकोपदकीवैत्र्प्ररथकीकेदुहूनकीत्र्प्रावृततद्दतदीपकत्र्प्रलंका
र॥यथाकवित॥धातुशिलादारूनिरधारप्रतिमाकीमासमीनकरतारहेविचारवीचोहरे
॥रसदीवत्र्प्रतरजहांनकछुत्र्प्रोतरहैजीनकोंनिरंतरजपावतहरेहरे॥त्र्प्रांजनविमलसेना
६ पतिमंनरंजनहैलषकेनिरंजनपरमपदेहरे॥करनसेवेदुरेकहीमैंचितदेहरेकहादेवीच
देहरेकहादेवीचदेहरे॥ ॥किकेमनुहारहारकरकेउपामनारी जियतेनहारीहियप्यारी
मनदिनमे॥बिलीनरोषहियनायककोंदोयधस्योजोपदडोत्र्प्रतिप्रियरानविनमें॥त्र्प्रो
रेउठलालनवबालकेमनायवेकोंदेषतरमालरूपदीठदेषविनमे॥ तजेसुनमोनतजो

मनकोमंतरजोर मिटोमानमाननीकोतुट्योजोरहीनमे॥७०॥इतिवस्तुप्रतिवस्तूपमा॥कोरिनि
कोमूल्यपकरेन दिनदानदेवोधरमकोमूल्यपक्यांचपहिचानवो॥वादिवेकोमूल्यपके
क्योमनरायवोहैजानवेकोमूल्यपकनलीबातमानवो॥हारवेकोमूल्यपकचातुरी
हैरनमांच्चातुरीकोमूल्यपकबातकहिजानवो॥प्रानमूलपानमउपाधिमूलतहांथोदे
वीवारदकोमूल्यपकआरसवखानवो॥७१॥प्रतिवस्तूपमवाक्यद्वैउपमेयरुउपमान॥ति
नकोधर्मक्रपककहीजुदेरपदमान॥७२॥सोहतपलुमतापकर त्योंचापकरसूर॥विपरु
आपनमेविये तजिमेंवैननकूर॥७३॥जहांदोयवाक्यहोयतामेंपुकउपमेयओरदूजोउप
मान॥अरुतनदुहुवाक्यनकोधर्मजुदोरपदहोयपेंदुउधर्मनिकोमावार्थपुकहीहोइ जैसे
योहतऔरतलसमयदोहूनकोमोलासरूलावार्थपुकहीहे॥ यथावासवैया॥ चंचलचार
तुरंगमतंगनओ गजंजीरनलावे॥हारधरेमनआपअनेक विलासनरीतिमनीम
नमावे॥सुमदेधामअरामकरेइकनामदिनेकछुकामनआवे॥वेदीअनेकनिर्मकधु
रोयरओंकविनांनदियाबगिनावे॥७४॥इसंउपमेयवाक्यअरुउपमानवाक्यकेकामन
आवेअरुदियाबनगिनावेइनदुहूनकोमावार्थपनोजोवृथापनेयोपुकहीहै॥कोऊकहै
अर्थावृत्तदीपकयोंयाकोंकहा विशेषयोलिखियतुहे॥अर्थावृत्तदीपकमेप्रस्तुतअप्रस्तु
तकोनेयमनाही जैसेफूलेबकदंबकेकेतकिविकसेआय॥ओरप्रतिवस्तूपमामेउप
मेयवाक्यतेप्रस्तुतओरउपमानवाक्यअप्रस्तुतहोइयहविशेष॥ओरआवृत्तदीपकमे २२

वैधर्म्यहोयनहीअरुयहांवैधर्म्यकहोरवैधर्म्यकहे पुकओरधर्मविधिरूपओरपुकओरनि
षेधरूपजेयेविपरुरसांपनमेवियेतजियेवैननकूर॥इहांपहिलेवाक्यमेनमेवियेयहनिषे
धरूपओरवाक्यमेतजिमेंयहविधिधर्मरहेपरंतुइनकोमावार्थसमकारवोदुहूनकोपुकहीहे॥
यथावातुक बित॥केइकआपफिरअनेकथरुअंबरकोंगतिमतिहीनफिरेवानकवनायके॥के
इतोअंदरदूपेपछदरबारनमेफिरतघुमामदीमेंभरजायके॥हमअरबीलेअतिगुनगरवी
लेधोरीकारुकेदवारेनांहिजावेंधायधामको॥गुननकेगुनगनआपतेपुगरहोतमनप्रमद
मोदकहाकहेसोंहमासके॥७५॥बिंबरूपप्रतिबिंबमेंदुहुवाक्यदृष्टांत॥कांतमान शशिही
बमोतहीकीरतवंत॥७६॥वार्ता॥जहांउपमेयवाक्यअरुउपमानवाक्यइनदोइधर्म
होर ओरतनदुहुवाक्यनकेआपसमेबिंबप्रतिबिंबभावहोयतहांदृष्टांतअलंकारजैसेउदाहर
उपमेय नकेवाक्यमेंकीरतवंतसमरुधर्मओरउपमानवाक्यमेंकांतमानयरुधर्मसोयदोउधर्मजुदेजु
देअर्थकोंकहतहेपरंतुइनदोउवाक्यनकेंआपसमेबिंबप्रतिबिंबभावहेयातेदृष्टांतअलं
कार॥यथावासवैया॥दीवसआनमदारनओरकोंपंअपनोहरआवतनांही॥पंडितहेगुन
उपमान मंडितहेपरतारतहैनरिआवतनांही॥प्रेमलियेंकहानेमलियेंजबप्रेमहियेंतबआवतनां वे
ही॥गावनहेंपकनआवतदेकहेआपनदेकरिआवतनांही॥७७॥कोऊकहेप्रतिवस्तूप
पमामेंदृष्टांतकोकहा विशेषमोकहियतुहे॥प्रतिवस्तूपमामेंदुहुवाक्यनदेके दोईधर्मनि
कोमावार्थपुकहीहोयजेसेमूलकेकहाइनमेंमोलकहकेतनमतइनदुहुनकोमावार्थमोल

सेयकहाहै॥ औरयहांदोइवाक्यनकेदोइधर्मकेदेऊहेजैसैउपमानवाक्यमैअंधाराको
उन रिवोऔरउपमेयवाक्यमैहरिवोमेईधर्मकेदेऊहेहैंपरंतुइनकेबिंबप्रतिबिंबभावहे
यातेदृष्टांतअलंकार॥ वैधर्मकेभेददृष्टांतसो यथा दोहा॥ दुसहदुराजप्रजानकोक्यो
नबढेदुखदंद॥ अधिकअंधेरोजगकरैमिलमावसरविचंद॥१०॥ दुइवाक्यकीएकता
होतनिदर्शनबंध॥ मीठेवचनउदारकेसकनकमांजसगंध॥२॥ जहांउपमेयवाक्य
कोअर्थअरुउपमानवाक्यकोअर्थइनदुहूनकोबिंबप्रतिबिंबभावतेएकताठहरे
सोनिदर्सनालंकार॥ जैसेउदाहरनमैउपमेयवाक्यार्थजोउदारपुरुषकेमीठेवचन
ताकोंसमयहरपदकरकेउपमानवाक्यार्थजोसोनेकोंसुगंधतासोंएकताकीनी॥ यथा वा
कवित॥ सरकेसमाजसरसदन मैबैठेजाकोंधरेअभिलाषलाभमेटचितचैनको॥ जा
हिलखिजंतुनिजआतमकोंसंतलहेकरअबअंतलहेअंतपरअैनको॥ ऐसोनरदेह
लाय पायविषयसनेहछायचितकूनकीनोरामनामलैनको॥ कांठकाजकाठाकरतहै कतो
आंगनकेकोरीकेवदलबेचोचिंतामणिरैनको॥३॥ इतिदृष्टांतनिदर्शन॥ औरठौरकेध
रमकोंऔरठौरआरोप॥ विद्रुमकियेधरनदैअधरललाईओप॥३॥ यहांविद्रुमकील
लाईअधरमांऊकहीयातेपहलीवाक्यार्थनिदर्शनादूसरीपदार्थवृत्तिनिदर्शना॥ य
थाकवित॥ मानहोहठीलीकहेंसुगनरसीलीकहाहेवानसकबीलीरीतप्रेमनिरभल १२

दो
की॥ इनकोनप्रेमनेऊकरैजिनरोसरथाकरिसीयकहाकरैबातहलकी॥ रसिकसु
जांनकेतलिजीमैननाकोतनतनकहेजसवैतकहाजातयेमछलकी॥ कहेजिनबोल
रूपेमूषेहीकसीलनेरेधरैपियराईपताकेतनकीकेहलकी॥४॥ अपिच॥ दोहा॥ वि
रहनकेजोवदनपररहितपिराईछाय॥ सोअबकेतकिपत्रपरवसीदेषिमतआय॥५॥
इहदूसरीनिदर्शनाकोंजयदेवतोललितोपमाऔपैकहतुहै॥ यद्यपिविरहनकेयहसे
हूंमैकेईवाक्यार्थवृत्तिनिदर्शनाकहतुहे॥ परंतुकुवलियानंदकरताकेमततोविशेषणक
रकेविशिष्टजोदोईधर्मीतिनकीएकताठहराईतैसोतोवाक्यार्थनिदर्शनाअरुउपमेय
रुउपमानइनदुहूनमांकतेकोईकोईमांऊठहरावनोसोपदार्थवृत्तिनिदर्शनाऔसेविचा
रकहदोहापदार्थवृत्तिनिदर्शनामैभयोहैऔयेवारसोनव॥ दोहा॥ रूपकमीतुमऔ
रतेतजकेतोहिमुरारि॥ सेवतहछबबूरकोछांहकल्पतरुडारि॥६॥ यहांएकहीवाक्यहैदो
यवाक्यनहीतोविसदोइविशिष्टधर्मीनकीएकताठहरीयातेवाक्यार्थवृत्तिनिदर्शनाठहरीम
लवोदाऐसेदुइवाक्यकीएकताऔसोप्रथमनिदर्शनाकेलछनकसोहैतहांवाक्यशब्दकरकेविं
बप्रतिबिंबभावकोलियेविशिष्टधर्मीऔसेग्रंथकर्ताकोआशयहै॥ तैसैईसवैया॥ मेटकेचै
नकोरैदिनरैनजोचाकरीऔनमदाधुसकारी॥ ताकोनचेतधरैगुनकोंजयेनेकसोदोषनिका
सनगारी॥ तेहैकहारसमछांनहदापूजुहैजमहरिकवारबिहारी॥ राजकोसंगकरैसकविरं

॥ रूमिलिंगकोसंगनुयंगकीप्यारी॥ ॥ स्हांरूवाक्यार्थवृत्तिनिदर्शनाहैयाहीसोंनिदर्शनाके
अरुरूपककेभिन्नताहे।जोपैरूपकमैविशेषणरहितजेम्रुखचंद्रादिकतिनकीएकता
कहीहै औरस्हांतोविशिष्टधर्मीनकीएकताकहीजोकोऊकहे।सोहा॥गगनओरगो —
प्रभुचरनबलिछलवेकेहेत॥कमलामनआसनकमलनालदंडसुषदेत॥ ॥स्हविशिष्टरूपककोउदाहरनप्राचीननकह्योहेसोतुमारेमतनो।विशिष्टदोउधर्मीजोविष्णुकोबलिछलिवेकोजगगनकीओरऊंचोकरयौपावसोंओरब्रह्माकेआसनक
मलकोनालदंडइनदुअनकीएकतावहरायालेवाक्यार्थवृत्तिनिदर्शनाभईस्वादिमेता
कोयहसमाधानलिषियतुहे।यद्यपिमहांविशिष्टदोयपदार्थनकीएकताहेपरंतुबिंब
प्रतिबिंबभावकोलिमेएकतानहीब्रह्माकेआसनकमलकोसंयोगसोईसाधारनधर्मठ
हरायोपरंतुदष्टान्तअरुस्कवरनकेजेयेमधुरवचनअरुसुगंधगुनएकदेरधर्मनिरूक
रकैबिंबप्रतिबिंबभावहे।तैसेबावरनांहीयातेअमिलेनक्रकहीरूपककह्योहेजहां
विशिष्टरूपकविशेष्यविशेषणकेउपमेयउपमानकोंपरस्परएकताठहराईहोइतहां
रूपकहीअलंकारहे।परंतुनिदर्शनानांही॥यथाकवित॥गोरेमुषगोलहरेहंसतकपो —
लवरुलोचनविलोलबोललोंनेलियेलाजपर॥लोनालगैलालबसोनाकविदेव १३

छविगोनासेठत्नरंगरूपकेसमाजपर॥वादराकीसारीनवनारीजरतारीदरदावनकि
नारीझीनीझालरकेमाजपर।मोतीगुहेकोरनचमकचढ्अओरसमकनोरनतरैयनकीता
नीद्विजराजपर॥ ॥स्हांमोतीगुहीकिनारीकेबीचरह्योमुखताकोंतरैयाकीओरनकर
मोलत्रिचंद्रमासोंएकताकीनीइनतेदोयविशिष्टधर्मीनकीएकताठहरीतोपिराइ
मुखके हांनिदर्शनानांही।जोयैचंद्रमासोंअरुमोतिनकेतरैयानसोंजुदोरअलादजोजिन्मादि
हैसमानधर्मविशेषणविशेष्यमिलिएकतानहीं॥अपिचसवैया॥राकाकीरातिउ
द्योतकोचंदनैह्रीयसमानजोकिजीयेतलसो॥वेसनईअरुतनछनईरतवितोलकैतन
नवाढतमलसो॥सोरतिकेश्रमस्वेदनस्वोकरचांपकैनैरोकियेसुषमलसो॥आननसों —
पियआननलायोगुलाबसोंनीजेगुलाबकेफूलसों॥ ॥इहांविशिष्टनकीउपमाहेय
रंतुनिदर्शनानहीं॥आपअवस्थातेअरुओरनकोंउपदेश॥धरयोताहिनिदर्शनाकिये
हितधरनधरसेस॥ ॥जहांकोउअपनीअवस्थाबताय औरसोंवाअवस्याकरउपदेश
करैसोयहनिदर्शनाकोभेदजैसेसेसनागआपनमिकोधरैलोगनसोंधरयोताहि
जानियेनहीऐसेउपदेसकरतुहे।यथादायवेया॥जाकेउदोतनेहोतप्रकाशमुवेत
यमर्द मनोमनकोदूरनसाई।ताकीविलोकीदशायहछीनअरुदुतिमंदअबैविलसाई।औरन

कौंमकरैउपदेसयौंग्यानकोदीपकसीयधुनाई। छीनदसाजिनकीतिनमोंकोऊनै
हकेनामनलेतसकाईी। ५५। अतिदरूपते॥ यहांगौरकोदीपकवातीकेजरगयेबिनु
सोसेतन लघुनिमंदहोतऔसीअवस्थानेऔरनसोंछीनदसा। औरेउपदेसकर
उहे॥ दोहा॥ उपमानरूउपमेयकेहोविशेषविनरेक॥ अंबुजतेमुषअधिकहै
मकरैकवनअनेक॥ ५६॥ यथावाकवित॥ तेरेमुषदेषेचंददेख्योनसुहातअस
चंदकैअयतनाकोमनतरसतहे॥ औरोतेरेमुषसोकहतसबकविऔसेदेषो
मुषचंदकेसमानदरसतहे॥ वेतोकछुसमझैनसेनापतिमेरेजानचंदतेबदनते
रेप्यारीसरसतहे। हसरमीठीमीठीवातैकहिरऔसेतिरछेकैकटाछकवचंदबरसत
है॥ ५७॥ जहांउपमेयकोअधिकाईसोव्यतिरेक॥ कवित॥ सवैया॥ होंनवलागुनरं
गरंगेमोनवपल्लवकेहरिरंगदीयोहे। हेजनकोलनवीरमनोंनवचापशिलमुषला
लीयोहे॥ लागननारिकोपायबुजनकोंमोहमहाऊनहेलदीयोहे॥ मोहेसमसोक
कीयोयहलोकमेंतोहिअसोकअसोककीयोहे॥ ५८॥ इतिवंसीधरस्य॥ जहांउपमा
नकीअधिकाईतेव्यतिरेक॥ कवि॥ दोहा॥ गाढेमृगहेरहेकरैकोसकोसेव॥ हेको
कपनरूपानकेहैंव्यसपकोजेव॥ ५९॥ जहांअधिकन्यूनताबिनाहीव्यतिरेक॥ दोहा॥ ५१

॥मोसहोकिजवसाघरीवसैंदुऊनवनाथ॥ कोरतिअरिऊनसंगहीजलनिधिपहु
चेजाय॥ ६०॥ यथावाकवित॥ सितासितपंगमेंकेचीचिनकेवीचवीचतामुषमरीच
नकीछविछहरातहे॥ कहेकासदायनीनीप्यारीवाकीपीठपरिपवनकीरीवपु
गलीनेलपटातहे॥ जाकेअंगगंधगवासीवसिऔयाकेपरिहेयमुनाओगंगजाको
रंगलियेजातहे॥ कोकमृगनैनीएकवेनीमेंअन्हातसवनैनवकीयेनीवाकीवे
नीमेंअन्हातहे॥ ६१॥ जहांचूयरेचरनमेंप्यारीपावरदीचपगलपटातयहसहो
किलक्षनकेदोहामेंननाइऔयेशाद्धस्योहेयातेदाजसवादरसायपकिया
वोरअलंकारनहीं॥ हेविनोक्तिहेजांतिकोअस्कनकछुविनछीन॥ असुपोलअधि
कीलहेअस्कनकछुरकहीन॥ ६२॥ दृगअंजनअरुकेजयेअंजनविनसोमेन॥ सब
हीगुनपरस्पयहेरंचसुपाइहेन॥ ६३॥ यथावाकवित॥ देष्योहैविचारयुगच्यारमेंति
हारनीकेविनाहरिनामधामधूमकोमहलहे॥ तजजगजीवनजीवनजगतमांझहे
हकोज्ञानआगेमूढकोपहलहे॥ मनमजविनेशत्रुप्रानकोतुराषतहेअरेमूढमो
मोंकहिकोनकोटहलहे॥ जोंगिरधारीजोतेंओरेउरधारीतोनैबानईबिगारीतेरोजी
वन्यहलहे॥ ६४॥ किंवाकवित॥ कहितहीवोलकेकरपेंकपोलधरेऔवानरत
हीमकोमेंऊविरलजो॥ चाहतहैचासतेरीदेषवहेराहअबचलोमनमोहनमनाय
न

बोमहहलगो।। नचलतहारूपजात रूपकोजो होत ओर ऐसे पैहो उछाहतजै नेहकै नव
लगो।। तमषिन निपाजै ऐसे धूमविनदिया जैसे मिटै मैंन मानिनी को नेह निरमलगो।। १७।।
लिखाधरस्यनावस्थ।। समासोक्ति अप्रस्तुत ताफुरै सप्रस्तुत मांझ।। कुमुदनकृ प्रफुल
नग्रहदेषककरसविधिपांझ।। २७।। जहांकाउ प्रस्तुतकोवर्नन करत मांझ तेको अप्र ऊ
स्तुतकोवृत्तांत फुरै सोसमासोक्ति अलंकार।। जैसे प्रस्तुतयांकथमैकोवरनन क
रतेहु तै कुमुदन शब्द केस्त्री लिंगपने ते ओरकलानिधि शब्द के पुलिंगपने ते ओर
श्लेषकरचतुरहपने ते ओर प्रफुलत शब्द के श्लेष अर्थकर आनंद ते कोऊ नायका
चतुरचउरनायक कों देषप्रसन्न होत है।। ऐसो अप्रस्तुत वृत्तांत फुरत है।। यथा
१।०७ दोहा।। कर अंबर पर धार है कल्मनाथ रह हेत।। धरै रागवात निदिशा निशाकों करत
संकेत।। २८।। इहां यांक बर्नन करत कोऊ एक नायका नाह के कपरा पकर वै केलरली
गनकेसंकोचरात कोपी केन करत ऐसे अंबरादिक शब्द केश्लेषयों अप्रस्तुत
वृत्तांत फुरै।। यथासवैया।। अलिके अति सोलन अमोल महाचलकुंडलसों तिलक
बरसै।। चलहार हियै विधुरेकच नार ओ स्वेद कपोलनमै दरसै।। अति लेत अप्रास्य
विलास महाचल चारु नितंबन को परसै।। शिलथमस है पीय तदार नैना स्रुमंदसु
नंदधरै परसै।। २९।। इति लपतिरायस्य।। इहां अलंकारादिक को सारत बोरलादिक दि २५

र्षमरमदार पायवेमें कुअरु विपरीत रति मैं या भासत है याते अप्रस्तुत विपरीत सुरत फुरत
है।। कऊपासरूपरूप अप्रस्तुत फुरै।। यथा सवैया।। मुख जहां मुख मोरके कुंजन को किल
कागकपोलन पराग।। फूले है कंजन गुंजत है अलि पुंज अलि लिये तरुकुंजपराग।। बूल
मोजल अप्रलगयो नर कैऊ बरनू मिट्यो अनुराग।। स्यो हरया लब है यह बाग विसाल बहै
अहपंथ तराग।। २६।। इहां प्रस्तुत पालतालबाग कों बरनत समयसों अप्रस्तुत काऊ अ
तयंपनवरि को अवस्था फुरै है।। दोहा।। हेपरिकर आसयतें लिये जहां विशेषण होइ।।
विधुवदनी यह नाह का ताप हरत है जोइ।। २७।। यहां विधुबदनी ऐसो नायका को विशे
षण चंद्रमा की शीतलता कर ताप टारिवे के अभिप्राय कों लिये है।। अथ याका कवित्त।।
लैगैपंचसायकसराशनके शायकनसायक है मदमति नाम धीर धरहो। कैहे विकूतर निर्
निशांकरे अकलग निमकल विवेक हीन प्रेम पंथपर है।। नाहि कछु सोच नत्रिलोचन व
यनचित्त धीर जकव चपरगाहे चैन धरहो। कुमनकमान वारो कम के वान बारे अज
मरूपान बारो मैन कहा करहो।। २८।। इहां त्रिलोचन मनचित्त औ यो धीर पुरुष कों विशे
षणमो कामजीतवे के अभिप्राय कों लिये हैं कै ईक देविनामति शय के विशेषण ते अ
पुष्टार्थ दोष आवे यथा।। आये हो लाल धरेउर मालर पालव जावन दीन विहारी।। कान
करै धनतानसु जानक हामिपरी मधुपार सुधारी।। मोहे कमहे चल कंचुक लाल लसै
नहगारुकजमे तहै प्यारी।। मांनन है नमनावन कौं मनमान धरे नव केवरवारी।। २९।। नाने अति
[illegible]

अभिप्राय लिये
विशेषण होय
विधु विशेषण वि
धुमहिताप
... को विधु
नीतिजकों
...
अभिप्राय

त्रिपायमें तौं लीने विशेषण धरयो सो दोष मिटायबे कों परंतु कोई अलंकार नहीं याको स
य माधान। तात्पर्य मकादिकनिरवाहकों जो कछू विनअभिप्राय हू विशेषण धरेतो पनत होदो
षन हींदै॥ यथा पद॥ तिय सीचतनैन स्रुधाधर ऐसे अधर अमरपनैन विसारसनैनी॥ तेमैं ठौर छ
कछु अभिप्राय लीने विशेषन सोय यथा कवित्त॥ आये प्रातमोहन समभार सबगान र छ
वि दरस्या नहै पीतांबर मचनकी॥ लट पटी पाग पेच अटपरे बानकतै किंकनीरनकने
मीकटि केनचनकी॥ प्यारी व्रजभूषनबनैहै हमदेषकैसे कीनी चतुराई तनचातुरी वच
नकी॥ रावरी निहारी छवि बिसरी हों विसारि लाल की जैसर वीनहाल न्रूपन रचनकी॥ अ
इहां चौथे चरन मैं यमक को निर्वाह लिये विहारी औं तो नायक को विशेषन धरयो है सो
और ठौर के विहार के अभिप्राय के लीने है सो इहां दोष मिटायबे की अपेक्षा तो है नहीं
केवल चमत्कार ही के लिये यातें अलंकार जैसें इहां यमकादिक के निर्वाह मैं अनेका
र्थ हरयो तैसें तहां जमकादिक नहीं तहां चमत्कार के लिये अलंकार उचित है॥
साभिप्राय विशेष्य ते परकुर अंकुर नाम॥ सुधेरू पिय केकहे ने कुन मान तबाम॥ ३१॥
राधो इहां बाम औं सो चपदसौं बाचीहै सो टेवाइ के अभिप्राय कौं लिये है॥ यथा कवित्त॥ सर
गंग फलीपावन हमारी कीरत तो शत्रु की अकीरत है ते नया कलि दही॥ तेरे करकंजन ते गुंजत
अमंद असदानमकरंद पाय मधुप नमलिदही॥ नारी स्वर्ग नर अपने न तिहारी ते गयपनउ
है षपन स्कदसबिं निरिंदही॥ राधरे महान तम लेषगुन देषन को रेश्वनसमत्य है करि दे औफनि ९८
पदकेरैं अर्थ बतैनहीपौ सम श्लेष१\ पदकेरैंही-अर्थ बततायको अन्यमौलेष भिसात्मा श्लेष२
दही॥ ३२॥ इहां फरिंदपद मैं फनिंद हजार पद ने के हजार जिह्वा के अभिप्राय कौं
उदोषरीमेदस काव्य-अपनद्रो ओर पदमैं दो अर्थ पुनजाये यांरें अर्थ लीने है॥ श्लेष अलंकृत अर्थ बहु एक शब्द में जोत॥ होय न श्रुरनने है विनु औसो प्रगट उ १ को दव
योत॥ ३३॥ यथा कवित्त॥ नौ ठौ नौ हरैर यो रोमां गेम बदेनक हैं मंगन को देव पद देन अरुनीः
बार बार है॥ जाको म बदे बेन ली सामि कीर्ति हो तसरदा सुजन मन नाथे निरधार है॥ विनाके अस्वाकै
शुद्ध-श्रवनं जो मित्र रहित विलसत अधनी के मधयकन कन जोरें दान पावपर वार है॥ सेनापति कचन शुद्धनीः
कीने कीरचना विचारो जामें समश्रसदाला दोकइकसा रहे॥ ३४॥ इहां दाना असत्र मुदोइ अ
र्थ समरुके नेत्र॥ किंच॥ दो०॥ अलिकुल रशिलीमुषन बनमेरहत सदा प्रति पक्षी नजन
न कमलन की हरन छवि तेरेन पनसकमाय॥ ३७॥ इहां प्रस्तुत कमल अरु मृग को
श्लेष॥ अपिच॥ जगबंदि तजाको उदय राजा अतिसमर्कदा यहे वदावतमृगु
र निरोधन दियें अनंद॥ ३५॥ इहां प्रस्तुत अरु अप्रस्तुत चंद्रमा को श्लेष ओने
तीन भांति को श्लेष हस्यो॥ प्रस्तुतश्लेष १ अप्रस्तुत श्लेष २ प्रस्तुताप्रस्तुत श्लेष॥ ३
जो कछु प्रस्तुत के लिये वरनें अप्रस्तुत रीत॥ अप्रस्तुत पर संसे है अलंकार यह नीत॥ ३६॥
कौं धे के पर बांधके जो कीनो मृगराज॥ कर कर क्यों करि हैं कहो करि कुल कंपन का ज
॥ ३७॥ इहां अप्रस्तुत केसरी को वर्नन सो प्रस्तुत को उकस्ति अरु बरकरब हो पदप
यक्ताप के को प्रस्तुत मानें ओ मनी वजन के ठाम तज नाम के लिये धरयो है॥ यथा वा
। अक्रम हरी न्यारी पदि लीने ही अर्थ फिर हासे जन-... प्रस्तुतरी ... जो अन्यहै ... अहीरप

कनिमेविरूपश्चुसुहपनिहारे हमराबहो हमेतोयोनारांवरीबदायहै। तजहोहरषकेतो ग्रं॰ पा॰
विलषनमेचौंकहुजहांजेहेनहांतहांदूनोजयगायहै॥ करनचदेगेनरशिरनचदेगेक
हिरूककविश्रनीनहाथहाथनविकायहै। देशमेरह्योपरदेयमेरहेगेकारूवेयमेरहे
गेतोपैरावरेकहायहै॥७०॥ अप्रस्तुतकेकहतेंप्रस्तुतकोकहतांकजानबेमेंश्रावेसो
अप्रस्तुतप्रस्तुतकेयंबंधतें॥ संबंधतीनप्रकारको। सारूप्य१ सामान्य२ विशे
ष२ कारणकार्यभाव॥३॥ सारूप्यकहेयरीक्षश्रवस्था यथा कवित॥ कांकरयेमुक्ता
कंजजहांतहांकुंदनकेपन्नाहीकीपेरामाजाकेचरूधांकरी॥ विरहेतमारमुनिउचरत
बेदधुनिसत्यकीयमेटिराशिविधिनानहांकरी॥ दासीश्रैयेपरकोउवायोमफोविछुरेते
कामीरामनउकअश्रैयोश्रायनाकरी॥ परयोकोककालतानेलक्योश्रैयोउछतालरत
द्योहेमरालतेचुगेगोकहांकांकरी॥७१॥ यहसारूप्यनिबंधनाअप्रस्तुतप्रसंगजहांप्रस्तुत
विशेषकीउक्तकेलियेअप्रस्तुतसामान्यकहेअथवाप्रस्तुतसामान्यकेलियेअप्रस्तु
तविशेषकहेसोक्रमसेसामान्यनिबंधनाअरुविशेषनिबंधना यथा दोहा॥ धरेनमनुमे
सोबजेवेरप्रबलयोंजान। सोवतश्रागलगायकेयदनमांझयरजान॥७०॥ इहांश्रीकृ
ष्णजीनेपहिलेशिशुपालदेखरनहीहोतासोंफेरसरुक्मिणीकेहरनतेंवेरहटकीनोअरुता
कोप्रतिकारकियांविनांहीनिचिंतहोहरहनोयोग्यनहींश्रैयेप्रस्तुतविशेषदृढकरिवेलि
येअप्रस्तुतसामान्यकह्यो। दोहा॥ धरउरंगकोंश्रंकमैंजोमयंकसकलेक॥ नयोम

गाधिपकेहरीमारतनाहिनियंक॥७१॥ इहांश्रीकृष्णसोंबलभद्रकोवचनहैतहीप्रसंग
महुतासोंदूसरापायककरहीकीरतकोलहे श्रैयेप्रस्तुतसामान्यअर्थकीदृढताकोंश्र
प्रस्तुतचंद्रसिंघकोविशेषरात्रवतांतथरयोहै॥ जहांप्रस्तुतकार्यकेलियेअप्रस्तुतका
रनकोंवतांतधरेअथवाप्रस्तुतकारणकेलियेअप्रस्तुतकार्यकोंवतांतधरेसोक्रमसों
कारननिबंधनाअरुकार्यनिबंधना यथाकवित॥ तचयो मिहरमूरपाबकमरीचिनमे
श्रहरनउदयगिरिकूंघोंतिजिसंकदे॥ धोमेंवारबारनालिवारिनिधिवारबीचिउरअनन्त वारद
परप्रहेमविनुपंककै॥ घेरकेरुधारसमेंश्रंचरमैंछानिविधिलाय्योंमोंजीदेहदुतिकी
नीवाकीश्रंककै॥ चीनीकेपियारनाचंदमंडलअखंडलज्योंताकोमलपंकयीदेवेदीसोक
लंकहै॥७२॥ इहांअप्रस्तुतरूपहैमनुरककोवृतांतधरयोहैसोताकोकार्यनायका
कोकोअसमाधानहेहदुतिजतायवेकेलियेसोयहकारननिबंधना॥ कवित॥ स
हजहिमहरअकटनसाहमहाराजपुहमीप्रलयमहादलकेपयानते॥ कहेचिंतामु
निमनसघननियानधुनिबेरीवनदसनविहीनवानयाननें॥ यहवयपियोनमहदुरध
कानअककेकेकिलकानलाजेदिगजदिमानतें॥ गुनयकेगिरियमगरद्योंअमरगिरत
परेरहेविमानश्रापमाननें॥७३॥ इहांअप्रस्तुतविमाननकोगिरवोधरयोहैयोप्रस्तुत
राजाकीसेनाकीअधिकाइजतायवेकोंसोयहकार्यनिबंधना श्रैयेपंचप्रकारकीअप्रस्तुत

नप्रसंसा॥यथा वा सवैया॥अति सुंदर बाल की चाल बिलोक मराल न सारस भरे न भरो क्यौ
नयन ओप न लाल उमाल प्रवाल समुद्र मै बूडि मरे न मरो क्यौ॥मृदु मीठे सुने मृगनैनी के बै
न सुक या पिक मौन धरे न धरो क्यौ॥छबि रीझ सु केस के देख हहा रनि मेघ भगे हो क्यो न करो
क्यौ॥२३॥पिछलै उदाहरन मै एक वस्त को उ वस्तु को कारन कर धरी है अरु इहां तो ए
क वस्त को देखबे सो और वस्त को कारन कह्यो सो औ ये उ उदाहरन पिछले न ने कार्य
निबंधना के धरे है और निहचै तो अप्रस्तुत प्रसंसा के पांच ही संबंध है औ पै जन कह्यो किय
उनां ही जो पै और हु अनेक नि के संबंध ते अप्रस्तुत प्रसंसा होइ सो है॥यथा दोहा॥निक
सी रद छद सदन ते उमगि सुमंद सुबास॥यह है जो कमरद हास की फैल रही उप्रास॥२४॥इ
हां अप्रस्तुत जो क उसास तिके वृत्तांत ते प्रस्तुत जो कहु सकोयारु औ सो नायका के हास की
मृदुनिक विके प्रस्तुत है इहां उपरु सुधान के कार्य कारन भाव संबंध तो नही यातें स
हेत तिसंबंध मारो है इहां सो सहोत्पत्ति कहे साथ उपज्यौ॥यथा वा कवित्त॥सुनी अह क
च कनील काच को मद ल सो है जग मग तारा जो निमुक ता अनेक कही॥मंगल है मानक रु पु
ना बुध मेरु गुरु लसै पुखराग सो है थोरी विधि केक ही॥हीरा सित नील मनि सनि निसनाई
क है कि ये मध्य नायक मरी चित्र अनिये कही॥राजाराम चंद्र जू की कीरत को कुंडल है मंडल अ
खंडल गगन को अयक कही॥२५॥इहां अप्रस्तुत गगन कुंडल वृत्तांत ते प्रस्तुत राजाराम चंद्र जू की
कीरति को अनंत विस्तार कवि कह्यो है सो इहां आधार आधेय भाव संबंध मारो ही हह सो औ ये १८

अप्रस्तुत प्रसंसा के अनेक संबंध होइ यातें मत अलंकार को पार नही॥मेरे जान
सापती पादिक के ई अलंकार उपमेयोपमान संबंध ते या ही के भेद मै समाय जा
ये परंतु काहू ने औ ये मे ठहरायो नही यातें हमहू ने ठहरायो नही॥अप्रस्तुत प्रसंसा इ
हां पर्याय यो स्वरूप ही कहिबो औ ये अर्थ है परंतु सक्ति को अर्थ नही जो पै निंदा
रूप माहू पनिबंधना दिक अप्रस्तुत प्रसंसा होत है जे पै मूल मै उदाहरन को है
रा॥अपिच॥कवित्त॥फूलन वयी ले जाके फलन रयी ले छिन छांह के न सी
ले पंथ पंथी सुषदाई है॥विटपन का मदार नियट निका मदार वहे ना मदार पू
षी अधिक उचाई है॥त्रह्यौ लोभ मयू वा अंत पायो फिर हू चाहा सौ मे ल जिमझ
वा जिय आगन लगाई है॥जग मै जन मजो पै काहू के न का मआवे क हाय ठयेब
रके बदे की विद्या ई है॥२७॥सारूप्य निबंधना को प्रस्तुत प्रस्तुत ते कर अमोति क्
कहि तहे। प्रस्तुत अंकुर है किये प्रस्तुत मे प्रसंसा म के हा गये अलिके नरेछा ह
यु कोमल जाय॥२८॥जहां एक प्रस्तुत के वृत्तांत मे दूसरे प्रस्तुत को वृत्तांत जना
वे तहां प्रस्तुतां कुर अलंकार:जैसे कोउ नाइका अपने नाइक सौ गवन मै फिर न जाय
के फल को छीन केन रापै बेलनौर को देखवा यो कहत कहा गयो॰इहां दूसरे प्रस्तुत
सुंदर घर की तिया को छांड कंटक सम मन नाइन नैरादिक के बीच रही ऐसी पस की या सो

औरवैसो चपल अस पउपमान अपुनेंनाश्कनायोतउपालेत: यथावासवैया॥
हाथगहेहरिनैहितुयोंउत्सागरलहाकेआदददाई॥अंबुजचक्रऊतेअधि
कपुनरानरेकोपऊचैनगदाई॥लाश्कदेमुखलागनहेहोजिनकेहितमोनंगहोन
कदाई॥सुक्रसंषजीनबजेपेरहेउमसंषकेसीसयदाई॥४५॥यथावासवैया
इकनानहीनारउतारदुकुलरकंनहीकंजयरोवरमे॥तिहआईअचानकहैसज
नीहसबोलीबिलोकयभीररमे॥यहहंसकीचंचुयोंचोंथेहेचारुसरोजहेकेरस
केआदरमे॥पल्लनालजातुचितैमुसकायदुरायरहीकुचअंबरमे॥४६॥इहांउअ
प्रस्तुतकबिनेयनैयाहीमेकहदीनेपहिलेदोईउदाहरननमेकोईअप्रस्तुतप्रशंसाऔ
यैधनिकहितहै॥अमापदेशकोअर्थयहजोकाहूकोमियकाहूकोकहनो॥औ
प्रस्तुतप्रयंयामैतोबाच्यअर्थधनिअप्रस्तुतहैयातैतहांप्रस्तुतअर्थप्रगटहोइ
योअलंकार॥अरुइहांतोबाच्यअर्थऊकेप्रस्तुतनहोतेचमत्कारकरदूसरोअर्थनि
यैनिहचैतोयहऔयोअलंकारधनिहीकेऔयो चित्रमिमांसावारेनेबतायोहि
यरउदाहरनमैतोअलंकारहीहै॥तहांकछुविवादहीनांहीजोयैकह्योहै शब्दअ
र्थकीशक्तियोंसंगअर्थजोहोइ॥नाहिकहेकबिबचनमैप्रगटअलेषनसोइ॥४७॥
यहीनऊबदाहरनसारूपनिबंधनाकेकहेऔररूपबंधमेकछुकलिखियेहै॥यथा १९

कवित्त॥एहोत्रिलोचनमासोचनकरऊचित्तउदंदुखमोचनमहाईसकवपाइहो॥जाय्हे
निमेषरेषदेषहोंसकलजगजगमगज्योतिजियकअधिकबढायहो॥कहेसिवरेनऔसे
रैनपायहोपरमचैननैनजोयैएकरैनआपकोंजगायहो॥दोम्नकेमांझएकमीनक्ते
हैतीसरेमकनाहिलहजागनरीजुगकोंबिनायहो॥४८॥इहांसिवरात्रिकेमहात्म्यमे
तीसरोलोचनप्रस्तुतहैताकरकैशिवसकलरूपपावनोयहप्रस्तुतहैसोरहोयोंप्य
स्तुतकनावसंबंध॥अपिचसवैया॥मोभरसोनयोमनोहेपंथसमंधीकहांअंबेजा
यकेलैबो॥मैनसेमैनाफिरैसजवानबिलोकतेकैतनतापबढैबो॥कंजज्योंकंतसरोमन
कोमकविदेसगयोधरधीरचितैबो॥कैसेजुजारूकहोंरहरानसतगहनदीअवसांऊ
कौनेबो॥४९॥इतिरुपकं॥इहांउपयोग्यमानसौनंधसोप्रस्तुतांकुरदेंसिंचादोहा॥मे
लैदियालियोसककरषुबनतछिनकगोनीर॥ताल्लिसारोअसरगजावरषेलमैआबीर॥५०॥
इहांप्रस्तुतअरगजाकेजलसूषनैतैवाकोकारनकोकमसबूलबिरहपीनापसोकप्रस्तुतहेयु
हकार्यकारनभावसंबंध॥जहांकार्यकीबराकारनकोपहिचानबोक बिप्रगटहीकरैतहांबो
अनुमानालंकार॥यथासवैया॥कंजकेपानरहेकुम्हलायजितैलगपीनउरोजरहेरी॥त्यौं
नतेबनितैपरयैतिनपल्लवऊपियराईगहेरी॥पीनबरीकटिकोनदिसंगस्मरंगहसोछबि
आछीलहैरी॥वाकेयतापअसरकोनापसत्रापहीतैयरमेजकहेरी॥५१॥दोहा॥यथा

योकिप्रकार देकछुरचनायोंवात॥मिसकरकार्यकिजीयेजैसेचित्तसकहान॥५६॥च
उरचदे जिनउबगरेविनगुनमारीमाल॥उमदोऊबे ठेढ़होंजानआवनेनाल॥५७॥ना
सी॥जहांकाहूवातकोंपूछेकहियकिरोनाहि॥औरहीकोऊअद्भुतप्रकारकरकहियेसो
पर्यायोक्तिपहिलोभेद॥यथाकवित्त॥गुननकेआगरेगुनहिदेषलावतहोंजोईहोतकछु
केनगारेकोउघटमे॥बीरीमांहिपीरीहोतनाहिनहिजाननहोजानहोजोईमोईकलाहो ॥
तम्रटमे॥एतेपरराधिकाकीमाकोनामचाहतउपायनमेदूजोनाहिदेषियेप्रगटमे॥गोप
कविकहेचतुराईमेदुराईवातमजनूकीरटमैयोयाहिबकेघटमे॥५८॥स्वांमीगनेकोंद
घ्दुतरचायनहोऔरकछुपेरजाननाहीछलहीजानतहोनारूपेकीरतिवाहोअसप
बालेलेऔसोविचारलहेरहस्यधेअर्थकोंप्रकारांतरकरकह्यो॥यथावायवेवा॥आज
रूकीअधिरातकरैजमभोहन्योसकनकारूमिटायो॥यासपनेकोस्वभावकहेतुमही
पियआपुनीवुद्धिकोलायो॥नीदकोनायसयोतवनेमहाराजहियेअसिचेटकछायो आहर
लालगयोगिरिमेरेगरेकोकहाकहियेसुपरीयसनपायो॥५९॥जहांकाहूमियकेअपने
कार्यसाधियेसोदुसरोभेद यथाकवित्त॥दूतीवारदोयतीनफिरआईतोऊमासोनहि
नारिलवगयेउठकैपैनहीं॥सोहेचायहाहापायकीनेऊअनेकभेदपायपरिहारे
पेनमामोपरजंतही॥प्यारीबऊनायकरियायवउचलीतवप्यारीचउयईछीकछीकी
२०

तिहवंतही॥औरकह्योजाऊकौनकऊकीबलायबोलेऔपनेकरहेजुलरोगेक
ऊऔंनही॥६०॥कवित्त॥तोहनमरोरकरसोरिकोंतेरकरबांकेनेनामेरकरआनि मे
अबयावगी॥करेमनुहारकरकारजकारकरकर्कयवचनबोलयाविहरि
यावगी॥इस्वरदुहाईतुमऔरयबकीजोयकसुरजिनबेठोफेरपीछेपछतावा
गी॥पीचपरवेनीलयलालजोपेरीकजेहेबऊस्योपियाकोंनितरूविबांसकहा
वगी॥६१॥यथावाकवित्त॥मानकियोमाननीमनायोनेकऊमामोनाहिमानही
मैयोयरहीरोयचित्तआनको॥एतेपरप्यारोआयहाबतहीयबपायसेनदेह
ईउठायलागेपगयानको॥प्यारिकोपरयजानजानतजईअजाननबनबबोली
बालयाहीपियठानके॥हारीहेरीयषउअकेलीहोंनिहालकविआवोहम
योवेदोऊपकेपटतानके॥६२॥आजस्कतिनिंदाविषेजवेबकाईहोयं॥स्वर
गच्छदायेयततलेकहागंगकऊनोहि॥६३॥जहांबाऊकीनिंदातेवाहीकीस्तु
तिनिकसेसोआजस्तुतिलेकार॥जैयेअहेगंगतेपततनकोंस्वर्गपुऊचायेयह
वमीविवेककीहानऔसेनिंदाकरगंगाजूकेयकलपापपुमवारनकेनारबेको
कोऊअद्भुतमहात्म्यकीस्तुतियही॥यथाकवित्त॥पीमोपयचोसिंताहिदेतहे
सराहरकोमातातेरोनामसिष्टवादहीपरतहे॥यहजननीनजननीतेमिस

रोगनासैतलोलाहिग्रंकलेकैसूलियैकरतहै॥गंगभागीरथिहूहैपावनपुनीतक
हुश्रेयीकरनीतजोदयाहिग्रादरतहै॥सोरोजलजानकारूवापुरेहुवायोशि
रबाकेतोकपालमांझआगप्रजरतहै॥६५॥अपिच॥कवित्त॥नमकहैधातासों
नरकेजमलोककोऊश्रेयेअधिकारकूत्वेकैयेलिजीयतुहै॥पापनकोबरकस्येतै
सवैसनेहोततिनरूकोपुर्नलोकभूदिजीयतुहै॥अधमविकारनरककरओय
करेयेजिनहीकेश्रीगनेकवारतिजीयतुहै॥स्वरकिजीयतपकहैरिकिजीयतुपकह
रकीजीयेतैपकेहरकिजीयतुहै॥६६॥इतित्रिवेनीवरनन॥जहांकाऊकीनिंदातेऔ
रहीकीस्तुतिनिकयैतहांव्याजस्तुतिः॥यथा॥नरकहैमनिमानकगंजकेपोरलेतुंज
[illegible]केकीजे॥औररूकोस्यवारनहीजिहमालमनाहिवतायपतीजे॥चोरनयोवन
ओढनकोपटमांहिरयोलनयोतनतेछीजे॥जापरयानदियोजोयेदानसमानतोआयात
उबायकेलीजे॥६७॥इहांयनिंदानिंदातेजापरस्यानकीस्तुतिनिकयेहै॥जहांका
ऊकीस्तुतितैऔरकाऊकीस्तुतिनिकयैतहांयव्याजस्तुति॥यथा॥सोरठा॥कान
नतयनकलंकक्योंहोकारकमीकहा॥तेंनिजस्युदुनिसंकअधरसधरयोविंबको॥
६८॥इहांयरवाकीस्तुतिमेंनायकाकेअधरकीस्तुतिनिकयैहै॥कवित्त॥ब्रह्मकेकमं
डलतेशिवजटमंडलतेगिरिजूपचंदनतेधारावहियतुहै॥तीनलोकपावनकोंआपदा
नयावनकोंजग्यगावनकोवानीचहियतुहै॥कहैरघुरायपायपूजोमिलियकरसुरस २१

रसरीपायेपापरापदहियतुहै॥यमुनाकीमहिमापैरेनयातैजानीगंगाजाकोपदपानीनाकी
रानीकहियतुहै॥६९॥व्याजनिंदजोस्तुतिमियेंनिंदाबरनैंव्याज॥लहीनमखतदुषइतोबोहरह
मरेकाज॥७०॥इहांनायकयोंकोलिकरदूतीआईतासोंअरोहमारेकाजतैंवाकेनषक्ष
तादिककोपलेदुखपायोयास्तुतिकरदूतीकीनिंदानायकानेप्रगटकीनी॥यथावाकवित्त॥
बीनकेसोलंबराविराजैकांधेऊबजाकेकाकहेप्रवीनतातेंनादीकोंचस्तुहै॥आगेऊचुपा
छैऊचकेयेउपजैनरुचित्रारोपाछेमहेकछुकुचहीगहतुहै॥अस्तुतमेंनिंदाहमुसकुवे
करतनिहीजाहेवठेदरसुनोकहाभोकहतुहै॥योरद्यौहैऊचछुनमोहनकेमनमांहचोरकी
निजरमैंबुगचारहतुहै॥७१॥जहांकाहूकीस्तुतिकेकाहूकीनिंदानिकयेतहांयव्याजनिंदा॥
कवित्त॥आनंनदेषतहेपोररूनपेषतहेगुननविशेषतहैधननकेयोरतें॥यंगनहिलोलतहै
दीनरूनबोलतहेआपकोनमोलतहैबचनमरोरतें॥वनमेंचरतघासपीवैजलललगेप्यासचित
मेंनरापैआपयोवेनिशतोरनें॥कहिहोकुरंगमेरोकोनत्येउनेगमिरिआगुरछीनकीनेचु
[illegible]मेंनयजोरतें॥७२॥इहांकुरंगकीस्तुतितेकविनैमजयेवाकोदुषतआपहीनिंदाधरीहै॥के
[illegible]हेरहावैधर्मयोंअप्रस्तुतप्रसंसाहै॥यथादोहा॥बीयनमेंब्रजकीफिरेफिरैऊजेऊंदी
रेकालिंदीकेतीरकेवेदेधप्यपमीर॥७२॥इहांप्यमीरधर्महैअरुहैअधर्मऔरयेवैधर्मको
अप्रस्तुतप्रसंसाहैकार्यकारणादिकसंबंधयेंनहीऔसेढंडीकहतहैजोयेवानेकसोहै॥अ
प्रस्तुतप्रसंसविनुप्रस्तुतबरननकीन॥मृगअरण्यकेधर्महैओरनकेनआधीन॥७३॥निहवे

तोव्याजनिंदाहीहैजोपैनिंदासोंस्तुतिअस्तुतियोंनिंदाजानवेमेंआवैयहअप्रस्तु
तप्रसंसासोंन्यारोहीचमत्कारहैनहीतोयकहीविषयकीजैव्याजस्तुतिअरुव्याजनिं
दातेकवाच्यअर्थकेअप्रस्तुतपनेतेंअप्रस्तुतप्रसंसाहीवहरे।।जहांकाहूकीनिं
दातेकछुऔरकीनिंदानिकसैतहांहूव्याजनिंदाअलंकारयथाकवित्त।।नाचीदी
बकीनीस्यामीनीउममोसोंप्यारेआनसोंरियेहैऐसोकोहैजगबावरो।।मेरोमनकहूअ सूधी
नैनचपांचरनआंषनहीआपकाजकीनेचाहचावरो।।रावरीसबाईदेषसषीनईइन
तैहोंगोकलकेचंदजूअनोषोउरझावरो।।देषननदेहोंरुकैयोहीतरसैंवोंअबहायेहू
कीआंषनदिषैरूपरावरो।।७०।।इहांनायकअपनेनेत्रकीनिंदाकीनीतामैंनायककीनिंदा
निकसतहै।।दोहा।।हीनजांलिआछेपहैएकनिषेधाभास।।पहिलेकहियेआपकछुबहुर
केरियेनास।।७४।।दुरेनिषेधजोविधवचनलछनतीनोंलेष।।होंनहिदूतीअगनतेतियतन
तापविशेष।।७५।।शीतकिरनदेदरसनअथवातियमुषआहि।।जाऊदईमोजनमदेचलेदे
उनमजाहु।।७७।।जहांएकवस्तुप्रगटछतहोंरनाकोंकोऊअभिप्रायकेहेतनिषेधकर
नोसोनिषेधाभास।।जैसेदूतीकेवचनमैंहोंनहिदूतीऐसोवचनसोआपनेयांचबोलवेकेअ
भिप्रायकोंबतावतहै।।यथाकवित्त।।हूवेदेस्यारेउमेहेसूवजेलगावतहैउमसबसाहु
नमेसरयविशेषिये।।रातिकोंजेआवतकहावतनेचेरउमसौरूयेआयेयानेंसाहनमें २२

देषिये।।नैनमहीलालअरुमसावरनभालहैजअवकरेकाजरकोलीकहूनदेषिये।।अ
मेरी रयोयोऊजरोहेरावरेकोलकुतामैंचासचूरीकोप्रतिबिंबपेषिये।।७८।।यहपहलैभेदको
न उदाहरन।।कवित्त।।रावरेकेमनजिनसुंदरीकोहैध्यानतेशविधिमकेपयोनिधिमैंरही है पे
।।ताकीकोनकिजीयेचराईननिताकोजेपेक्रुपाकरनेकुदीवरायतेविहारीहै।।सतोपाव
दरसे धारेश्नतेननकोंसपदेतेकिंसुककुसमकलीउरमैसवारीहै।।नोहिनांहिप्यारेआजमेरे
ईवियेशनचीछातहै तिहारीतामैंचंद्रकलाधारीहै।।७९।।यहदूसरोभेदकोउदाहरन।।स
वैया।।हमकोंउमएकअनेकतुमैंउन्हीकेविवेकअधीनवहो।।इतिचाहतिहारीतिहारीउतै
कर्त निविचारीकोनेहसदानिवहो।।अबकीबोमुबारकपेइकरोउनहीकेसदागलना निलहो।।
घनस्यामसुधीरहेआनंदयोंरहोनीकेरहेउनहीकेरहो।।८०।।यहतीसरेभेदकोउदाहर
न।।दोहा।।होतछमांतिविनाबनाकारनविनुहीकाज।।विनयावकदीनेचरनअरुनलषेहे
आज।।८१।।यथावा।।अरुनबनातकिधौसूरआभाप्रातकिधौमीनपरयातकिधौगुंजा
हारदरक्यो।।लालसहकारकिधौकमलनलसारकिधौगुलेवांसहारकिधौहिंगुलसरनदरक्यो दलनहीअ रचाकरी
।।वंदनऔचोलकिधौचलदललोलकिधौउपमाअतोलतामैंबंसीजियनरक्यो।।यावकबिनां
हीप्रीयहलसचासपरीलालबलालपरीलषलालमनअरुक्यो।।८२।।हेतुअरुनतेजबैकार्यर
रनहोइ।।कुसुमबानकरगहमदनसबजगजीतोजोइ।।८३।।यथावादोहा।।तीजपरबसोन

नयजे न्यूषन बसन यरीर ।। सबै मरगजे सुहकरी बहै मरगजे पीर ।। ७४ ।। अति बंधक के होत
रू कारज प्रन कौ मान ।। निय दिनस्क नयं गत नकु नैन राग को पान ।। ७५ ।। यथा वा दोहा ।।
कलमन मोहन देखिये बिरह दूबरे गात ।। नैन बारसी चनत कछु यिये ता पत्र अधिकात ।। ७६ ।। ज
बैअ कारन वस्त है कारज पर गट होत ।। कोयल की बानी स्रवे बोलन सकै न कपोत ।। ७७ ।।
।। यथा वा दोहा ।। नमैं कंचुकी तें कुच सुरक सदा प्रफुलत सरोज ।। देखे चंपक कली लता स्यात हे सी
कलदोय ।। ७८ ।। काज कारन ने जबै कारज होइ विरुद्ध ।। कारन मोहन सीता पयस्सम बीरगति
कस्सुध ।। ७९ ।। यथा वा सवैया ।। वे मग श्रं धनको पग दाचल बोइन नीक नरू को निवास्यो ।।
वे च लिवास बयावन है रन बाम उजारकु वा पन पास्यो ।। स्पूर तथा दृज लावत वेइन भे मत्र्य था
हके बारिधि फांस्यो ।। देख ऊरी हरि की बसुरी इनकै ये सुबंयको नांव विगास्यो ।। ८० ।। सुन कछु
कार्य तैं जन्वे उपजै कारन रूप ।। नेन मीन ते दो पिये सरिता बह सत्र न रूप ।। ८१ ।। यथा वा दंडक ।।
कलन पर तकरू लल नचलन कह्यो विरह चलासों देह दहके दहकर ।। लागी रहै हिलकी
हलकस किहा ले हिये देवकहे गरो तर आवत गहक गहक ।। दीरघ उसास लै लै ससिमुखी
ससकत सकल पसले नो लंक लहके लहकलहक ।। मानै वर भौन इन लोचन सरोजन तें वार
को प्रवाह बयो आवत बहक बहक ।। ८२ ।। जो सेजहां विरोध सो यहै विरोधालंकार ।। मुकधना
मैं कप जात है बामु बचै द्रंस कास ।। ८३ ।। यथा कवित ।। पुलन पुनीत पय पेशलप्रवाह चलै फब

गुनही में करत ।। अरु अतिशयो कि मे गुन दोषवरनन को नियम नहीं ।। सो निरुक्ति ज
बयोग सों अर्थ कल्पना आन ।। उधब कुब्जा वश भये निर्गुन बहे निदान ।। ८४ ।। जहां
एक शब्द की और ही युसत्ति ठहरावे तिहां मुख्य अर्थ को छांड और ही अर्थ ठहरावे त
हां निरुक्ति अलंकार ।। जैसे उधब सों गोपिन के प्रवचन तहां विछ सत्वर अन मे गुन रहि
नयाते निर्गुन औ एक प्रसिद्ध है वा हि गोपिन कि कुबजा प्रसंग ते निर्गुन औ ऐसे प्रगट है
वा ही गोपिन कु बजा प्रसंग ते निर्गुन को ऐसे प्रयोग ते निर्गुन अर्थ कल विवेक दीन ठ
हराई ।। यथा वा सवैया ।। तो पद्मा सन्निहार के बारिज बारि मे लाज बढाय रु बानो ।।
देखत ते चाल विसाल भयो विसराय रत ये हगयं दल जानो ।। तो कटि देख के के हरी कु
करे बन बास सदा बिलखानो ।। तो मुख संक धरे विधरंक सकै यह ही कल के ससी कहा
हानो ।। ८५ ।। इहां संसा के लछन नेचन्द्र मौ ये पीक ठहरायो ।। सो प्रतिषेध निषेध जो ।।
और यनिषेधो जाय ।। निहन बान विनोद है नहीं सु चोपर चाय ।। ८६ ।। जहां एक व
स्तु प्रसिद्ध ही प्रतिबिंब है ता हिकहु अभिप्राय के लिये फेर निषेध करनो सो प्रति
षेध जैसे ये सु कह्यो चोपर नहीं यह सब कोई जानत है तऊ चोपर नहीं ऐसे कह्यो सो इ
ह अभिप्राय तें कह्यो जो तिहारी हिम्मत चोपर ही में पर ति सुरु मैन ही ।। यथा वा ।। रचेन
जिन अस रूप आगन तें लोग हिये दुख देन ।। दुर्जन नहीं ये कवच न तो किये सु दुर्जन बेन ।। ८७ ।।
अलंकार विधि विध जो ।। कार्य सा धिये और ।। कोइल है की इलजो रिझमै कर देंगे और ।। ८८ ।।

असंपकरसाधी सिवरहिं ना हि कछु अभिप्राय के लिये फेरयो ॥ नियो विधि जैसे को
कलसौ मिसकोकल देई ना हि फेरको कल है कोक मज जैसे ॥ ऐसे सु ॥ नयौं वाके
अलिमधरस्व निज साथ येको ॥ यथा वा कवित्त ॥ प्रेयुनी गुन पाय चातुरी निपुनपा
इकीजीये न मैं लोभ नका रूजो कछू करी ॥ वीरता पराये भारगये को स्वनाव यह मानसु
पमान का रूरे करी कछू करी ॥ रूपे ऊकविचलेजान है य जाके बचतो कजोअसे
करदेवी कारूप लदू करी ॥ वैरे गजराज बसे कर कैरि ताके मध्य कछू कर प्रयुक्त करी सन्तु
करी सन्तु करी ॥ ७७ ॥ हेतु अलंकृति दोय है कारज कारन संयोग ॥ कारज कारन पुज बेमसु
यक ही संग ॥ ७४ ॥ उदित नयो त्रा विमानिनी मान मिटावन मान ॥ मेरे रिस समृद्धि है तेरी
दीव बमान ॥ जहां कारन कारज के लिये कहो हेतु तहां हेतु रलंकार ॥ जैसे ये भ्माकार
नमानमेटन कारज के लिये कह्यो ॥ यथा वा कवित्त ॥ फैल रहे चहूं ओर विक्रस्य मूह
घनदरबत सु मनस लिल छूटकारी है ॥ टूटपरे मुकता हल राजत बलाक दल भूषन श्री
बच ओर घोर अनुकारी है ॥ पुलकत अंग फूले ललित कदंबन अदंतनके अंकुर दुच
भ छवि भारी है ॥ आनंद बिना न भई लता उल्हावन कौं प्यारी विपरीत तरनि पावस नि शारी
है ॥ ७५ ॥ जहां कारन को कारज अरु पठहरावै न हां कहे हेतु अलंकार जैसे यदी विरहि को कार
नता हि सारूा न रिस हीवहराई ॥ यथा वा दोहा ॥ कोई कोरक सीय हो कोई लाग हजार ॥
मो पै प नियदुप दिरख ॥ विपत विकरन हार ॥ ७६ ॥ इति श्री मरसिक विन्द हरे पानस बिंद ७२

मकरंद मिलिंद पतिराय विरचिते वंशीधरक विराय रुक्तो पपुष्टा व लंकारैरत्नाकरे अ
लंकार शब्द निरूपणोनाम द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥ अकरन नाम तिन चरनकौं दीनि बुधि जिन दे
व ॥ अलंकार और रेकहूं अगट पंचदश नेव ॥ १ ॥ छप्पय ॥ रसवत प्रयो प्रेय बक ऊरजे
स्वित लहिये ॥ समाहित हि पुन जानबकर स्नावोदक कहिये ॥ ना व संधि पुन जान बकर
[illegible] सबलन ॥ पुन प्रसन्न अनुमान ओर उपमान सबलन ॥ पुन शब्द सअर्थापत्ति क
हि अनुपलब्धि संभव पदित ॥ येत [illegible] पंचदश जानिय अलंकार सब सकल विचित ॥ २ ॥
अथ रसवदलंकार चोपई ॥ अलंकार रसवत सम देव ॥ इक रस कौं अंगी रस पेव ॥ के
रस अंग भाव को होय ॥ इह विधि जान उसव कवि लोय ॥ ३ ॥ अथ रसवत अलंकार को प्र
संग पाय रस रूप मैं रस के प्रसूलि लिपि यतु है ॥ यथा ॥ विभाव अनुभाव व्यभिचारी भावस्त
तीन के संयोग सौं प्रगट जो कोउ स्थाई भाव सो रस कहिये ॥ दोहा ॥ आलंबन उद्दीप
है है विभाव की जान ॥ दंपतिका दि वसंत शशि मधुर वस्तु गन मान ॥ ४ ॥ होय कछु कै अंग मै
चेष्टा सहज सुभाय ॥ ता हि कहित अनुभाव सब कवि कोविद बुधि राय ॥ ५ ॥ कवित्त ॥
आदि निर्वेद ग्लानि संका अमोअसूया मद श्रम आलस्य यौं दीनता वषानिये ॥ चिंता मो
ह स्मरन धृति लाज चपलाई हरष आवेग जडता सो जानिये ॥ गर्ब विषाद निद्रा अप
स्मार और सपन विबोध मति अमरष अवहित्थ मानिये ॥ व्याधि [illegible] उग्रता वितर्क

उन्माद अभिचारीयतेभावपहचानियें॥४॥ दोहा॥ रतिरु हास पुन शोक कहि क्रोध अरु
उत्साह। भयजुगुप्सा विस्मय कहो थाई भाव कहाह॥५॥ निहकिभाव अनुभाव पुन। व्य
भिचारी इक संग॥ जनवनताई भाव कौं होत तहां रसरंग॥६॥ है शृंगार अरु हास्यरस अरु
करुना रौद्र अरु वीर। भयकारी बीभत्स है अद्भुत शांत सुधीर॥७॥ जहां प्रकरण अरु रस
को अंग होय। अथवा रसका उस थाई अभिचारी भाव को अंग होय तहां रसवत अलंका
र जानिये॥ यथा कवित॥ रंगियन ओरी रीति सरस पलप थरतिस्वेदकन नीजे अंगराग हिलपेट
तो॥ सोई होतो न रफ राय नरौरै विन भीर ज कौं अनिही चपल जैसे नैनी बी कौं जपे टतो॥ देखो
यह आज विधि ही की विपरीतता जु नाप हिय दावनजो तापन न मेटतो॥ पत्य पर स्नेहो
ऊं मेटे चुक आज मनमत्थ शर नैहै जो हम रिठर मेटतो॥ [illegible]॥ इहां रन मांझ नृ स्त्रिवा को
थकढो हि ताको वरनन सो इहां शृंगार रस करुना रस को अंग है॥ सवैया॥ जल जोर भरा
घन घोर धरा ब्रज ऊपर कोप पुरंदर को॥ कवि पुरकर गोकुल गोप सबै निरखे मुख श्री मुरली ध
रको॥ धरलै धरबो धरनीधर को धर क्यों न हियो धरनीधर को॥ [illegible] करलै जनु कोक रको करको
करको करको करुना करको॥९॥ इहां अनुचर अनुसौं जु कविकीरति है ताको अंग है॥
भाव अंग जर रस को होइ भाव भाव को केउ अंग सोइ॥ अलंकार ये हि तासो यादि कहि पुन कह
भावप्रकाश॥ [illegible] प्रेय अलं०॥ को कोई भाव अलंकार रुक्म कहत है॥ सवैया॥ हौं कब वे कां
ग यौं अंगराग [illegible] स हाग यौं प्रेम पगे हों॥ हैं कब चंद की चांदनी में मुख चंद को चाह कै जा ४२

विमकी

पगे हैं॥ हौं कब वेम करी [illegible] बतियां सुनकै छतियां सौं लगे हों॥ हौं अब वे कब नैन
मौन विलाय कैं बैन सौं रस जौ हैं॥ वं॥ [illegible]॥ यहां चिंता अभिचारी भाव में शृंगार रस को
अंग है॥ कवित॥ बार बोर वे कों ब्रज बोरै वज्रधर घुले बारद पगाये द्याता हिस मृगाय से॥
चिंतामनि अंगुरी के छोर गिरिवर राख गोपी ग्वाल गैयन के गन ही बचाय हैं॥ दूर के गुमान व
र्षा को महा मेघन को त्यां लो मघवा कौं अब रोदन कराय दें॥ वादी के हजार एक श्री बिन की
आं सुनयौं मंदर पुरंदर के मंदर बहाय हैं॥११॥ इहां गर्व संचारी भाव उत्साह स्थाई भाव को
अंग है॥ अलंकार उजस्विन जांन। ताकि इह विधि नेद प्रमान॥ रसाभास कैं भावाभास॥ भा
वरस को अंग प्रकाश॥ १२ दोहा॥ जहां सु अनुचित भाव है अनुचित रस जिह ठौर॥ भा
वाभास उथम है रसाभास है और॥ १३॥ यथा॥ काटि दल बैरन के पार महिमुं उनसौं की नैजु
ऊ या टजियसो अतनरनि के॥ गादे रखा हिगद समहर के टाय अद मोद कै उडाय दीनी सुरकैं
सुरीन के। तिनकी रानी सब सैसी रजधानी तज बन मैं मजनजा नूजूरु जू मृगीनु के॥ ऐसे च व
लिर पुरु पुलकत अंग न हां वस्त्र अनगन अंग पेयत स्वीन के॥१४॥ इहां शृंगार रसाभास सो
भासौं जाक विकीरति ताको अंग है॥ दोहा॥ आयेय जरु अबल बलन रेग रबरन काज॥ छवदे
य न जनु मफल नो कहि त धरे चि सलाज॥१५॥ इहां राजा पर अतुनको रति आवना वाभास सो
कविकीरति को अंग है॥ चोपई॥ होय जु भाव उपशम जब अंग॥ कहत समाहित पाय प्रयोग॥
॥यथा कवित्त॥ देखौं कहा करै मोसौं ऐसे ही विचार चित मौन धरि ठाढौ रसौ रोविसु सुकानन कों॥

तापैबानेसोंमोमोयोंबोलतनकाहेमठमनमहिरोयधरजरूमविधानकों॥ऐसेऐईपर
स्परओरेईनिजरहेमचातुरीतैताकौनबकीनोहेबिधानकों॥ताहीमैमेकारूमियविहमन
दीनोजबदेवतजधीरतनडारेओसरुबानकों॥४०॥रहंकोधकौउपजंतसोशृंगाररसकोअं
गहे॥जहंतावकौउदयफलहे॥तावउदयपुनतासोंकहे॥यथाकवित॥दामनीदमकरा
रचापकीचमकस्यामघटाकीजमकघनघोरचकओरते॥कोकलाकलापीकयकूजतहेजि
र्ततिलवहनसमीरसीरसीकरऊकोरते॥सेनापतिआवनकसौहेमनभावनरूलग्योतरसा
वनविरहवरजोरते॥आयोसखीयावनरूमदनसरसावनलग्योवरसावनसलिलघनघोर
ते॥४२॥रहोविषादसंचारीभावकोउदयहे॥भावविरुद्धजरैजिहठोर॥भावसंधिकहेंक
बिमोर॥यथा॥दो॥पियबिछुरनकोदुसहदुखहरखजातपीप्यार॥दुरयोधनलोंदेखियेत
जतप्रानजिहबार॥४३॥रहोविषादहरखकीसंधिहे॥भावअनेकजउपजेआय॥भाव
यबलताकहतवनाय॥यथासवैया॥चंदकितेकितछीरसमुंदरूयादिलबैमननांछिरौं
गी॥वेमधरीरसरूयबयानकहेकिहरीतसकधीरधरौंगी॥कौनयहैमुरलीबनमालधरैविनके
तमिलैनमरौंगी॥केहेकलंकअतंककहासखिहोंकबअंकनिसंकनरौंगी॥४४॥रहोचित
कंथनिमतिदीनताश्रमसंकाओतसककीयवलताहे॥अथप्रसंगादिकआलंकारका
रकोस्वरूपतिखियतुहे॥रेखेयमनतिजविषयफलहेताहिप्रसंगअलंकृतकहे॥यथाक
वित॥ताम्यमेनेरनेनरूनतजनकबेनकोपरागराजज्योंगयंदपातिकरिगो॥रामधरिते

अनुमानविषय चक्रोसेयोगरजआहेहनरचटकपिनचगोसादूटकैउतरगो॥तनकतनकतबजानकीके
कानपरीठारीरहीऊंचपरनीलयोंउघरगो॥चकओरचांदनीमुखरकज्योंफैलरहीमनुरा
ऊमुखनैछिपाकरअछरगो॥४५॥रहंअमानअलनेयदेकअपनोविषयसाधरूपलवे
॥कारनतहियेलहिजबकाज॥अनुमानालंकृतरहसाज॥४६॥यथा॥सवैया॥मुनियमा
लनईअनिशीतलमंदनईपियचंदकीजोहन॥मोरचिरीचरनासुधचारुकरैचकओरसनोमु
नमोहन॥जोसनयेअनुमानतहौंउवियेउविग्वालिनगायकेदोहन॥बालविसालनईतन
लालयैंताम्रतदीनदिवावस्योहन॥४७॥उपमाजबदीजेचितलाय॥उपमानालंकृतरह
जाय॥४८॥यथासवैया॥स्यामघटाअलकैललकेबगपंतलस्येमुकतामुरवारी॥कोकलकंठ
हरासमनोंहनमिहरीदरसैहरियारी॥इंदुवधूमहदीकरकीदुतिदतिनदामिनिदीउजियारी॥
राजतआजकल्यानकहेरितुपावसलीनवजोबनप्यारी॥४९॥अस्त्रलोकनोवचनप्रमान॥
शब्दअलंकृतिकहितजान॥यथासवैया॥रांकरयेमुनिजाहिरटैचउरानतआननचार
नैगावे॥सोहियेनैउसीआवतहीमतिमंदमहारसयानकहावे॥जापरदेतअदेतसुयंगमरा
रतप्रानन्वारतलावे॥ताहिअहीरकीछोहरियाछछियाभरिछाछकौनाचनचावे॥५०॥रहंसं
कासेमुनिजाहिरटेरसादिकशास्त्रकेवचनकीप्रमानताधरिहे॥अलथवस्तबदरावेजहां॥उ सुअर्थ
मे देपत्तिअर्थापतितहां॥यथा॥दोहा॥यदपिमधनदेखियेतऊसरूहेनिरधार॥नतरककाकेअर —
धरैमगलोचनिकचनार॥५१॥कहुजनअसकपरैनहिजानअचलुपलब्धिनबसेयप्रमान॥यथा

है
॥दोहा॥नायत है सजनी सबही जिन बाल पनै यंगके लिकरी॥जोबनकी दुति अंगनमांझ कहै कछु रंग अनंग धरी है॥मोहि अचंभ बकोचित है जु किते व रूप भुला आन अरी है॥बैनन मैन लियै नन मैन हिये नन मैन नहीं जान परी है॥२५॥अहां समस्त को संभव होय॥संभव कहि समया नेलोय॥२६॥यथा दोहा॥जकन नो सम दे पियन तउ न जानत होय॥महि मंडल वरु रतन जतक हित यया नेलोय॥२७॥यथा॥विन जाने व काज हवात॥पति हां लंकृत तिसकु कसन॥यथा॥औरे है कंत विदेश तै॥जिन जिय धरै विवाद॥जीवत नर सो सुफल हु तन औरे पैलो कमुवाद॥३०॥इतिश्रीमद् खिल वि० रस प्रमाणा लंकार निरूपणो नाम रत्नी यस्तरंग॥अथ अलंकार शब्द अर्थ नै॥मिलैजु केई आन॥जुदे २ संसृष्टि है पय निम शंकर मान॥१॥तिल तंदुल र तसु बीज र पुन द्वि शसद सकर मान्य रात वो पसन रसिंघ जिम॥मिलत परस्पर आय॥३॥संसृष्टि जुप्रथम हिकहै अंग अंगी भाव॥समप्रधान संदेह इक वाचक प्रवल वनाव॥अनुपमादि कजे है अलंकार अरु शब्द अलंकार कहे है तिन मांझ ते केई अलंकार को दूसरो अलंकार की अपेक्षा न रहै अरु को ऊ काहू को बाधक न होय अपने ठौर जुदे २ प्रगट रहे जैसे तिल अरु तंदुल मिलि जाय तऊ अपने २ सरूप के जुदे २ दीसै ते ऐसे ठौर संसृष्टि कहिये॥अरु दूध जल जौ परस्पर लीन है जाय तहां शंकर कहिये॥वाके चार भेद॥अंगांगी भाव संकर॥१॥समप्रधान संकर॥२॥संदेह संकर॥३॥एक वाचकानुप्रवेश संकर॥४॥अंगांगी भाव जैसे बीज अरु वृक्ष को कारन है तैसे एक अलंकार दूसरे अलंकार को अंग होय तहां अंगांगी भाव संकर॥१॥समप्रधान जैसे दिवस अरु सूर्य दोई साथ ही प्रगट है तैसे दु अलंकार साथ ही नामै तहां सम प्रधान संकर॥२॥संदेह जैसे रात अरु दीपक ८५

जैसे रात होय तब दीपक न होय अरु दीपक होय तब रात न होय ऐसे ही संदेह अलंकार एक जैसे भ्रम मिटाय दूसरो ज्ञै न तैसे अरु दूसरे को मिटाय पहिलो प्रगट व्है तै ऐसे अलंकार औरन अलंकार को बाधन करे तहां संदेह संकर॥३॥वाचकानुप्रवेश जैसे नरसिंह जू को आकार एक सरीर मे दोय रूप नर को अरु सिंह को ऐसे एक पद वाक्य मे दोई अलंकार होय तहां वाचकानुप्रवेश संकर॥४॥संसृष्टि अलंकार को लक्षण अर्थालंकार की संसृष्टि यथा कवित॥ऐन कोउ नीकी राधे मोहन संवारी नये औ नै पट नान रही पान न नैसुम तै॥ओस नैउ लट बेनी लाल कै के उर कैके जनु कै अंजन मैं लगी रुचे सपने॥कर तन मर मांझ जोबन की जेब जीत त्रि सोमन मन अल सोय रही सपते॥हा को हराय मनो मैन मथ करनकी धरी देउ तार मह चंपे केधनु बा है॥यहां यथा यथा अरु उत्प्रेक्षा की संसृष्टि है॥दूजे शब्दालंकार की संसृष्टि यथा कवित॥पीक हग की लीक उरली कसी लगी है लाल मिटे मेरी तुम औरै लीक लागे हो॥आरसी लैदे खो नेकु आरसी लपटे हो कित आरसी लगत मुकर तन मेरे आगे हो॥कपट महाउर महाउर दे ना निय चुनाय जा हो यम्य जाके जा के पग लागे हो॥नो रही तैं जोरवन जोरवन आये मोहि को न पतिनी के पतिनी के निशा जागे हो॥यहां जमक अनुप्रास की संसृष्टि है॥तीजे शब्दार्थालंकार की संसृष्टि यथा कवित॥इन्द्र जैसे जंभ पर बाडो जिम अंबु पर रावन सदैन पर रघुकुल राज है॥पौन वारि वाह पर शंभु रति नाह पर ज्यों सहसबाहु पर राम द्विजराज है॥दावा द्रुम दंड पर चीता मृग झुंड पर भूषन वितुंड पर जैसे मृगराज है॥तेज तम अंस पर कान्ह जिम कंस पर त्यों म्लेच्छ वंश पर सेर सिवराज है॥यहां उपमा अनुप्रास अरु उपमा की संसृष्टि॥इति श्री

स्टिसमाप्त॥ अंगांगी नाचसंकरयथा॥ कवित्त॥ अंक दसन न लीरे लेत है कलेवरकों मं
त्र हून मानत सिखायो पंचशरको॥ अलिगुंजरत फुंकरत मिसकु पित्त कै कस्यो ईचहत प्रान
पान बपु वरको॥ कहै दयादेव जो लौं निकरन आवत पतौ लौं उमकादे जपनी ननामह्वरको
दिखा निकसौरी निस्वसमेसआशा शिषरते मानो इंदु फन है विरह विषधरको॥ ॥ इहां रूपकउ
त्प्रेक्षाको अंग है तो पै बिरह को विषधर सौं रूपक कीनो॥ न हो तो तो चंद्रमा कै फन की उत्प्रेक्षा
आधार बिनां अंगलेख बनेन ही॥ यथा वा सवैया॥ उदयाचल गह्वर तैं निकस्यो गदि गादघनो हिय
रो यक आनंद जू॥ किरनैं नष निछन चंचवसनच पेटनु के लियै आपने फंद जू॥ चक्र औ रस्व
कोर करै मिलसोय सुफगावत है गुनजो जयछंद जू॥ मनु मन्मथ व्याधु रचे रहे मोनमनो
गयें दहि चंद मये दज॥ ॥ इहां रूपकउत्प्रेक्षाको अंग है जो तम कौं करी सो आसत्व इंदुकौं के
हरी यों रूपक कीनो न होय तो तारा बिंद कै मोती की उत्प्रेक्षा बनै नहीं॥ अपिच कवित्त॥ गेंवरग
रट सजहै दुरसघन रथ पैदलके थह चढी फौज उतरकानेकी॥ नृपमनमनमत्त तायो चंपत के छ
त्रसाल रचो रनब्याल फौके हाल हिदवानेकी॥ केयक हजार एक बार रडारे बैरी रंजक द
गन मांक आगन स्यानेकी॥ स्पेर सफगन येन सगरस्कनन लागी कपिलसराप ज्यौं तरापतो
हीरी रूपक जो पवानेकी॥ ६॥ समप्रधानसंकर यथा॥ निय फैलत तचऊधां चितै। विचअंबर उडुजाल॥ दि
पताका... शाकी विधुकर परसमनु टूटी मुक्तियमाल॥ ७॥ इहां उडुजालकों दिसाकी टूटी मोतीमालकी
हेत्... उत्प्रेक्षा करनन रूपक करि अंबरादि कशब्द के श्लेष सौं चंद्र अस दिशाके दंपतिभावकौ यसमा
सोक्तिकौं निभैही उत्प्रेक्षा है॥ यथा वा सवैया॥ बेदी कहा धरि मौन सकोन मै ... कलोन

की बोलद री चे॥ चंग अवाज चकोर समाजकरै मन मोद धरे मह दिवी चे॥ अंबर नील ल
सै तिहि चंद की चारु छुटी चऊ घां रससी चे॥ इंदु दिशाधरनी धर पै मनु फैलत लाल गुला
लमरीचे॥ ॥ इहां मरीचिनकों गुलालकी उत्प्रेक्षा सो इंदु दिशा अरु धरनीधरादि कशब्द के
श्लेषयों कोई कामी पुरुष काहू की स्त्री सामवस्त्र पहरें ठाढी है ताके कुच पर गुलाल डार
त ऐसी यसमासोक्तिकौं कीनें ही उत्प्रेक्षा है। ताकों अंग अंबरादिक शब्दकौ श्लेष अरु
धरनीधर शब्द को अतिशयोक्ति है॥ ९॥ तिसमप्रधानसंकर॥ संदेहसंकर यथा॥ कवित्तः
नीरजमनि दीपतें जू होइ धूमधारता की स्याही यों घनस्यामु चिकुर बनाय कै॥ जनबूले
अबाल लाल प्रगट प्रबाल बाल सारयों अधर रंगन रे चित लाय कै॥ पुहो प्रान प्यारी तेरे
आनन अनूप दस हलनवलसो ही छ बिर चै यरयाव केंं॥ सुषमा सरोज यास अपर यैंव
नावे जब चतुर चितेरो चंद चित्र राच हाय के॥ ९॥ इहां जो इतनी सामग्री होइ तब नाय
नाय का को चित्र बनै इतनो कवि को आशय होय तो यौ भावना अलंकार अरु इतनी साम
ग्री मिलै उनही अस नाको चित्र बनै ऊनही ऐसे ये कविको आशय होय तो मिथ्याध्यवसि
त लंकार ऐसे परस्परकों मिटाय वेको योग्य अलंकारयंत्र वे यातें संदेहसंकर॥ यथा वा क
वित्त॥ फलन बसी ले ताके फलन रसी ले छित छांह नसी लेपंथ पंथी सुषदाई हे॥ विट

नकामदार विपटनिकामदार बडेनामदार भूमी अधिक उचाई है॥ नलौन मसू वाग्री
जिम सपायो फिरद ना हास्यो खेल जूवा नियम गन लगाई है॥ जगमैं जनम जो पैकाहू
कौने काम आवे कहा सब येमरबे के बडे की बडाई है॥२०॥ इहां कवि के प्रस्तुत येवर
टक को बरन न होय तो सामूप सौं प्रस्तुत दुरजन के बरनन की प्रतीत होत है
याते समासोक्ति अ०॥ अथवा प्रस्तुत दुरजन ही है ताको दूत नै न जताय वे को अ
प्रस्तुत येवर को बरनन धरयो है सो अप्रस्तुत प्रसंसा अथवा पास येवर हू को दृष्ट
है अस्तु दुरजन हू निकट बैठो है तहां सेमर हू को बरनन अप्रस्तुत दुरजन को मरम प्र
काम न पुदोई प्रस्तुत याते प्रस्तुतांकुर औरऊ इहां तीन अलंकारन को संदेह संदे
र है॥ इति संदेह संकर:॥ एक वाच कानु प्रवेस संकर कोई कोई द्वय अलंकार अस अर्थ
लंकार के संयोग ही ने कहत है॥ यथा सवैया॥ फेनक धूरधरे शिर पूरन गुंजत मंजु मधू
अनमें॥ दान करै मद नीरय मी रजंजीर मनो आवत है बनमें॥ मत्त बुझे नव पंकज याते
नैंद पंक्ति अंड धरे मनमें॥ तोर के योरिन खंभन को यह मैं गमतंग फिरे बनमें॥२१॥ इहां
जहा नुप्राय अस्तु पकको संकर है जहां शब्दालंकार अरु अर्थालंकार जुदे रहो
य तहां संस्रष्टि अरु जहां एक पद में दोई होय तहां एक वाचकानुप्रवेश संकर जैसे नगमते
ग यह कर्मधारय समास करि एक ही पद है ताही मैं लानुप्रास अरु रूपक दोय मिले याते एक

वाचकानुप्रवेश संकर॥ अरु कवि लियानंद कर्त्ता ने तो अर्थालंकार रू मैं ठहरायो है॥ य
था दोहा॥ सोधम्यवत शशि शिल सलिल बालत श्रोन तरंग॥ उदये इंदु सतानि को रतिन भ्रम
नंग॥२२॥ इहां सम्प्रति कविवर नवनीत उदाहरन ही और अयोग को योग याते संबंधातिशयोक्ति
पदोष अलंकार को संकर: जिन शब्दन करि उदाहरन अलंकार होत है तिनही करि अतिशयो
क्ति अलंकार रू सेन है॥ को ऊक है दुहून की इहां संसृष्टि है ताको समाधान: संसृष्टि में दो
ई अलंकार के सूचक शब्द जुदे रहे होय इहां जिन शब्दन करि उदाहरन को सूचन तिन ही करि अ
तिशयोक्ति को सूचन॥ कोई अंगांगीभाव संकर कहै सो कहनही कोऊ काहू को अंग नाहीं अ
कोई सैसमप्रधान संकर कहै सो कहनही जो पै समप्रधान संकर मै दोई अलंकार साध्य नामै परंतु दुहू
न के सूचक शब्द जुदे रहे होय अरु इहां तो वे शब्द दुहून के सूचक है॥ कोई संदेह संकर कहै
है सो कहनही जो पैदोई अलंकारन मांझ ते कोऊ काहू को बाधक होय तो संदेह संकर सो न वैया
तैस हलैमार रूम संकर अलंकार तैय कवाच कानुप्रवेश संकर न्यारो ही है सो॥ जैसे विट्टिगराग
अरु केदारो राग को परस्पर मिले है तैसे जिन र अलंकारन की छाया मिलै ता को सत्रह अलंका
र शिखर यंत्र मै लिखियत है॥ इति एक वाचकानुप्रवेश संकर:॥ करूसंकरन को संकर देखियतु
है॥ यथा सवैया॥ कवि खेलत फाग फनारि नि पंगअनंग नरंग महाय रसे॥ तिहु हिय मुनिय
माल बिसाल उरोजन तैकर के परसे॥ गिरिन्ह मिगुलाल ते लालन ये फतो दार मजान सुबाकर
रसे॥ लछिमीय हसा इज हांजगनाह के दानही की मिहिमा दरसे॥२३॥ इहां कवि की समदिकहिया

तैसै लक्षनालंकार उदात्त के आश्रय सों मोती गुलाल कर लाल भये यह तद्गुनालंकार औ
रय हीलवाई सु वाके अरथ की समर्थ कयाते काव्य लिंगालंकार सोई हां एक ही लाल शब्द
रत्न अरु कर के तद्गुन अरु काव्यलिंग को सूचन है याते दुहून को एक वाचक अनुप्रवेस संक
र ताकर कै द्वार मजान सूवा कर ये यह भ्रांतमानालंकार इन दुहून मिल कै उदात्तालंकार की
सुंदरताकी नी याते अंगांगीभाव संकर ।। औसे ही कवि की संपति सोई कार्य अरु याहू जहां
को दान महिमा सो कपल्पदोई धरे है याते हेतु रूलंकार अथवा प्रश्नोत्तर अनेक कवि की संप
ति कर माह जहां की संपत प्रस्तुत होय तो कारन निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा अथवा दुरू
नकी संपत प्रस्तुत होय तो प्रस्तुतांकुर ऐसे इन तीन रूअलंकारन को संदेह संकर ।।
किंच कवि की संपत्त को बरनन तहां दिन अयोग हि योग ।। यालछनते संबंध ।। तिशयोक्ति
अलंकार के अस्तु हानि अलंकार के एक वाच कानुप्रवेश संकर ।। अरु कवि सैं पति और रा
जा को दान इन दोई कार्य कारन करकै हेत्वलंकार तामैं अनुत्तदारता कोबरनसोई अनु
क्ति अलंकार योंएक वाच कानुप्रवेश संकर ।। वाके आश्रय सों कवि की संपति रूप कार्य की
द्वारा राजा संपति रूप कारन प्रस्तुत होय तो कारन निबंधना अप्रस्तुत प्रसंसा अथवा कवि सैं
पति और राजा संपति दोइ प्रस्तुत होय तो प्रस्तुतांकुर सो इन अप्रस्तुत प्रसंसा अरु प्रस्तु
तांकुर के संदेह संकर सो राजा की संपत बरनन उदात्तालंकार मैं गद है ।। ता के एक वाच कानुप्रवेस सं
कर यारी तमों इहां तीन रूपक वाच कानुप्रवेसन को समप्रधान संकर है ।। जो पै इन तीन रू संकर मां
फ ते काहू को अंग नांही या प्रकार इहो चार रू संकरन को संकर है छहा तः २ अतिशयोक्ति: २ तद्गु ४८

न: ३ काव्यलिंग: ४ भ्रांति: ५ हेतु: ६ अप्रस्तुत प्रसंसा ७ प्रस्तुतांकुर: ८ अनुक्ति: ९ औसे नौ के
अलंकार यासवैया मे धरे है औसे और रू उदाहरन विचार लीजो ।। इति श्रीमद् खिलविद्व
द् पादारविंद मकरंद मलिंद दलपतिराय विरचिते वंशीधर कवि सुतोपयुक्तालंकाररत्ना
करे संकर निरूपणो नाम चतुर्थस्तरंगो ग्रंथ समाप्तः ।। ४ ।। कवित्त: चोपया सवैया छप्पय: दो
हा गद्य सर्वसंख्या ८०० संवत् १८५१ वर्षे जेष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ अष्टम्यां भौमवासरे लि
पीकृतं: सेवग चैनराम नागोर मध्ये ।। वाचक धरम लुप्त उपमा औ रूपक मैं संदेह विक
ल्पमे अभेद सो जनावे हे ।। छेकापह्नुति सों व्याजउक्ति जाम्यो जाय वाक्यार्थ निदर्शना
सो ललितलखावे है ।। परिकर काव्यलिंग सूक्ष्मोत्तर पर्यायुक्ति दूजे अधिक सों व्याजस्तुति
दिखावे है ।। विषम अनिष्ट फल बारे सों विषाद और तिथि रे प्रहर्षन यों सम सों कहावे है ।। १ ।।
अनोन्य परस्पर पर्याय विशेष तौ जो प्रथम सु दीप कारक दिखावे है ।। संभावन मिथ्याध्य
व सित सामान्य हीसों कवि उन मीलन विशेष ही सों गावे है ।। सूक्ष्मोत्तर गूढोक्ति ही सों भावे चप
लातिशयोक्ति प्रथम विभावनमें जान चे मे आवे है ।। दीपक अरथ आवृत्त प्रतिवस्तूपम अ
रु ऐसे तीनों यों एकेठ दिखावे है ।। २ ।। चोथी तो विभावना सु दूसरो विषम अरु व्याघात प्रथ
म तीनू मिन्न ता दुरावे है ।। समासोक्ति अप्रस्तुत प्रसंसा प्रस्तुतांकुर गूढ उक्ति व्याजस्तेन ध्वनि
कथन जतावे है ।। तीसरी विभावना विशेषोक्ति अवर्ण सो अतद्गुन ओ सु पूर्व रूप का मिलावे है ।।
ये ते अलंकारन के एक से उदाहरन लक्षन पै भेद कीये भिन्न जे द्यावे है ।। ३ ।।

४१५

चित्रावली

तुल्योपमा	रूपक	
संदेह	विकल्प	
भेदापन्हुति	आक्षेपोक्ति	
तुल्ययोगिता	दीपक	
निदर्शना	ललित	
परिकर	काव्यलिंग	
पर्यायोक्ति	गुणोत्तर	
अप्रस्तुत	अधिक	२
विषम३	विषाद	
सम३	प्रहर्षन	
अन्योन्य	परिवृत्त	
पर्याय	विशेष	
समुच्चय.	कारकदीपक	
संभावना	मिथ्याध्यव°	
मीलित	सामान्य	
उन्मीलित	विशेष	
गूढोत्तर	गूढोक्ति	
चपलातिशय	चित्रावली	

काव्यदीप	प्रतिवस्तूपमा	दृष्टान्त		
चित्रावली	विषम२	आक्षेप२		
समासोक्ति	अप्रस्तुतप्रशंसा	प्रस्तुतांकुर	गूढोक्ति	
विभावना	विशेषोक्ति	असंगति	प्रतीप	सूक्ष्म२